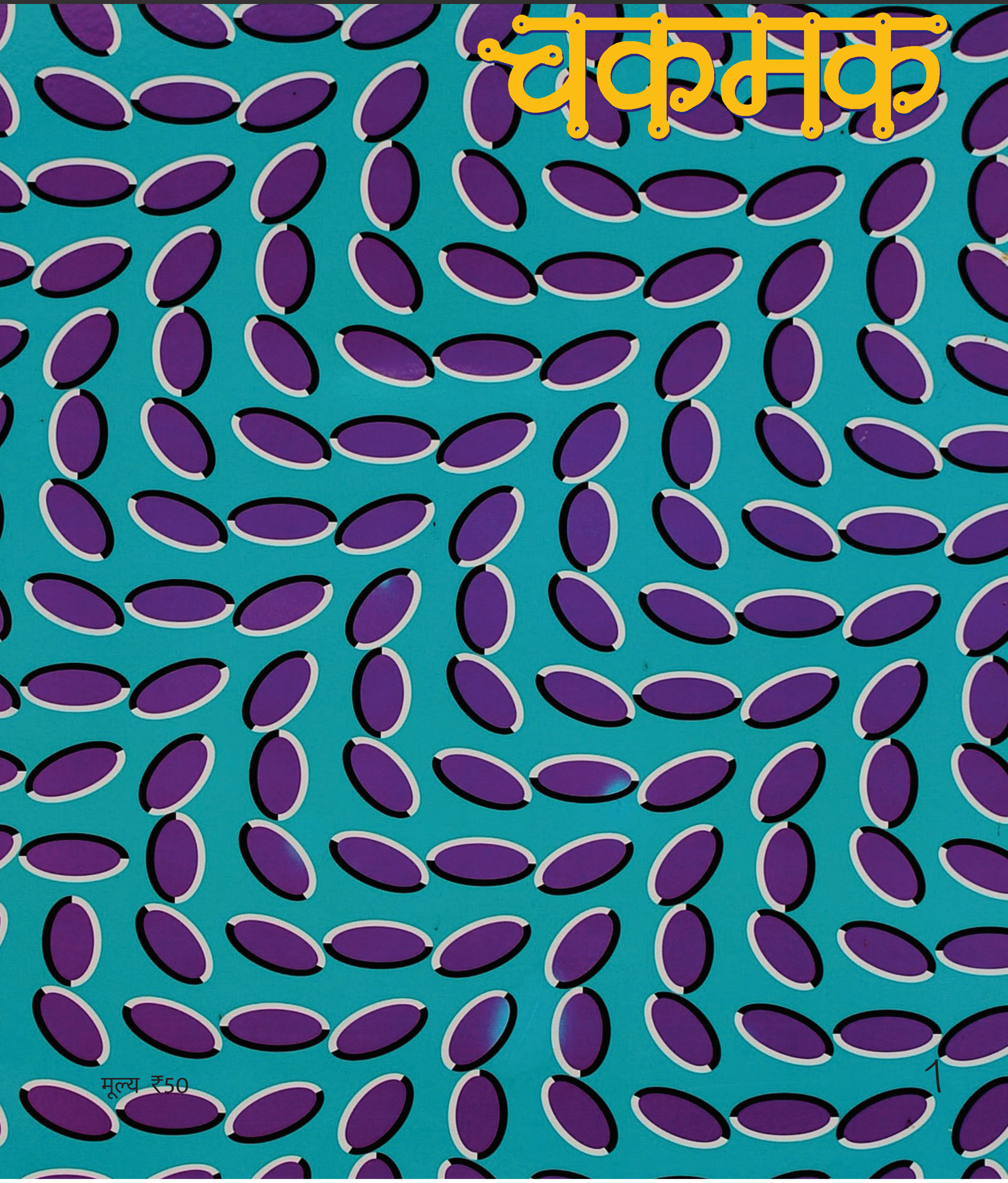
RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 मई 2022

बाल विज्ञान पत्रिका, मई 2022

चकमक



मूल्य ₹50

20 मई को विश्व मधुमक्खी दिवस है

मधुमक्खियाँ कहती हैं...

रोहन चक्रवर्ती
अनुवादः सजिता नायर



अंक 428 ● मई 2022

चकमक

इस बार



सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादन सहयोग
सजिता नायर

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण चित्र: एक दृष्टिभ्रम
इससे सम्बन्धित लेख तुम पेज 12 पर पढ़ सकते हो।

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

तालाबन्दी के बाद पहला सफर

शानिता

चित्र: हबीब अली

तालाबन्दी में बचपन

कोरोना की दूसरी लहर के कारण तालाबन्दी लग गई थी। न हम कहीं जा सकते थे, और न ही हमारे पास कोई आ सकता था। कोरोना के केस जब कम होने शुरू हुए तो सरकार ने भी तालाबन्दी उठा ली। तालाबन्दी खुलने के साथ ही आना-जाना शुरू हो गया। लोग मास्क लगाकर बाहर निकलने लगे। जैसे ही पापा को पता चला कि तालाबन्दी खुल गई है तो उन्होंने कहा कि अब हमें अलीगढ़ हो आना चाहिए। क्या पता फिर से तालाबन्दी लग जाए? तब तो हम अपने किसी रिश्तेदार से मिल भी नहीं पाएँगे!

इस बात पर अम्मी ने तुरन्त कहा कि आप सही कह रहे हैं। और हम सब अलीगढ़ जाने के लिए तैयार होने लगे। दोपहर हो रही थी। शामवाली ट्रेन से जाना तय हुआ। अम्मी ने एक अटैची में हम सब के तीन-तीन जोड़ी कपड़े रखे। खाना खाया और हम अपना सामान लेकर चलने को तैयार हो गए।

हम सभी साढ़े पाँच बजे घर से निकल लिए। हमारी ट्रेन छह बजकर बीस मिनट पर थी। हम सबने मास्क पहना था। स्टेशन पहुँचे तो रिक्शेवाले को हमने तीस रुपए दिए। वहाँ देखा कि स्टेशन पर पहले की तरह भीड़ नहीं थी। जो लोग दिखाई दे रहे थे वे सब एक-दूसरे से दूर-दूर खड़े थे। पापा हम सबकी टिकट लेने गए। जब पापा वहाँ पहुँचे तो देखा कि वहाँ पर तीन काउंटर थे। पहले काउंटर में लिखा था – पंजीकरण करवाएँ। दूसरे में लिखा था – आदमी यहाँ टिकट बनवाएँ। और तीसरे में लिखा था – यहाँ औरतें टिकट बनवाएँ।

पापा ने दूसरे काउंटर से टिकट बनवाया। टिकट लेकर पापा लौटे ही थे कि कुछ देर में ट्रेन भी आ गई। हम सब जल्दी-जल्दी ट्रेन में चढ़े। पापा जेंट्स



डिब्बे में और मैं, अम्मी और बहनों के साथ लेडीज़ डिब्बे में। अम्मी, मैं और मेरी बहनें एक सीट पर लाइन से बैठ गए। मैं खिड़की के पास बैठी थी।

ट्रेन में सफर करते वक्त सभी लोग बहुत शान्त थे। सामने बैठी एक औरत (जिसने साड़ी बाँधी हुई थी) अम्मी से बोलीं, "मैं तो अपने रिश्तेदारों से मिलने आई थी और तालाबन्दी में यहीं फँस गई। इस तालाबन्दी ने दिखा दिया कि रिश्तेदारी दो से तीन दिन की ही अच्छी होती है।" अम्मी बोलीं, "सही कहा आपने। लेकिन हम लोग क्या कर सकते हैं। इस कोरोना ने वो भी दिखा दिया जो हमने सोचा तक नहीं था।"

फिर वे बोलीं, "मैं तो अपने घर अलीगढ़ जा रही हूँ। मेरा सुसराल और मायका दोनों वहीं है। जब बीमारी फैली तो रोज़ रिश्तेदारों के फोन आते थे कि दिल्ली में हवा ज़हरीली हो गई है। तुम लोग यहीं आ जाओ। लेकिन हम जाते तो कैसे जाते, कोई साधन ही नहीं था। जैसे ही तालाबन्दी खुली, बस जी चाहा कि अपनों के बीच चला जाए।"

इन सब बातों के बीच मेरा ध्यान बार-बार ट्रेन में बैठे और लोगों पर चला जाता। पहले भी कई बार सफर किया है लेकिन ये सफर उनसे एकदम अलग था। इस सफर में बच्चे ट्रेन में इधर से उधर दौड़ नहीं रहे थे। वे अपने बड़ों के साथ चुपचाप



बैठे हुए थे। जैसे उन्हें पूरी तरह समझा-बुझाकर लाया गया हो।

ट्रेन भरी हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो तालाबन्दी खुलते ही पूरा शहर निकल पड़ा हो अपनों से मिलने। मास्क में मेरा दम घुट रहा था। वहाँ मौजूद सभी लोगों का यही हाल था। मास्क पहनना सभी की मजबूरी थी। ट्रेन में गर्मी भी बहुत थी। पंखों की हवा का तो पता भी नहीं चल रहा था।

अम्मी बार-बार ट्रेन में इधर-उधर देखतीं। अगर कोई छींकता या खाँसता तो अम्मी जल्दी से हमें पकड़कर अपनी ओर कर लेतीं। वैसे तो सभी ने मास्क लगाया हुआ था, लेकिन अम्मी ना जाने क्यों इतनी परेशान थीं।

ट्रेन की आवाज़ के साथ-साथ लोगों के बातें करने की धीमी आवाज़ें भी कानों तक आ रही थीं। लोग कोरोना के समय की अपने बीते दिनों की दिक्कतों को दोहरा रहे थे। किसी के पास राशन नहीं था, तो किसी के पास कमरे का किराया नहीं था। किसी का इलाज रुक गया था, तो किसी का काम छूट गया था। कोई रिश्तेदारी में फँस गया था, तो कोई किसी की मौत के बाद भी जा नहीं पाया।

पता नहीं ये कैसा सफर था। सूखा-सूखा-सा। कोई चनेवाला, मूँगफलीवाला, पूरीवाला ट्रेन में आ ही नहीं रहा था। मैं सोच रही थी कि कहीं वे लोग भी तो अपने गाँव नहीं लौट गए। चलते वक्त मुझे तो लगा था कि कोरोना चला गया है। लेकिन यहाँ तो लग रहा था कि कोरोना हमारे बीच ही दुबका पड़ा है।

रात होते ही लोग अपने-अपने नियत स्टेशनों पर उतरने लगे। कुछ लोग ट्रेन में चढ़ने भी लगे। तभी ट्रेन में एक व्यक्ति चढ़ा जो बाल्टी में रखकर समोसे बेच रहा था। उसने मुँह पर मास्क पहना हुआ था। उसको देखकर मेरी जान में जान आई। कोई तो आया, नहीं तो मैं भूखों ही मर जाती।

मेरी बहनों को भी भूख लग रही थी। इसलिए मैंने अम्मी से कहा कि मुझे समोसे खाने हैं। अम्मी ने कहा, "अभी नहीं, कुछ समय में घर पहुँच जाएँगे तब हाथ-मुँह धोकर खाना। तुम जानती हो ना कि ये कैसी बीमारी चल रही है।"

मेरी बड़ी बहन बोली, "देख शानिता, इन्होंने ग्लब्स भी नहीं पहने हैं।" मुझे यूट्यूबवाली वीडियो याद आई जिसमें एक आदमी बोल रहा था कि प्लीज़ बिना मास्क और बिना ग्लब्स पहने किसी के भी हाथ का कुछ ना खाओ। लेकिन मुझे बहुत भूख लगी थी।

बहुत ज़िद करने पर अम्मी ने समोसेवाले से पूछा, "एक समोसा कितने रुपए का है?" उसने कहा, "पाँच रुपए का।" अम्मी ने पाँच समोसे देने को कहा। उसने एक अखबार के पाँच टुकड़े किए। जैसे ही उस पर समोसे रखने लगा कि अम्मी बोल पड़ीं, "भैया, पेपर पर मत रखो।" अम्मी ने बैग से गोल डिब्बा निकाला जिसमें अम्मी रिश्तेदारों के लिए कुछ सामान रखकर ले जा रही थीं। उसके ढक्कन पर अम्मी ने समोसे रखवाए। फिर हमारे हाथों पर सेनेटाइज़र की बूँदे टपकाईं। हम सभी ने जब हाथ मले तब अम्मी ने हमारे सामने समोसे भरा ढक्कन रखा।

अम्मी ने उसे पैसे दिए। पैसे लेकर वो आदमी अगले स्टेशन पर उतर गया। हम सबने समोसे खाए। लेकिन अम्मी हमें ही देखती रहीं। उनके मन में कहीं न कहीं कोरोना का डर समाया हुआ था।

कुछ देर बाद मुझे प्यास लगी तो मैंने अम्मी से कहा। अम्मी ने कहा कि गाड़ी रुकने दे जब कोई दुकान आएगी तो पानी की बोतल ले लूँगी। खुले का पानी नहीं पीना है।



घर से जो पानी लेकर आए थे वो तो खतम हो गया था। एक स्टेशन आया। वहाँ पर ट्रेन रुकी। एक व्यक्ति आया जो पानी की बोतल बेच रहा था। अम्मी ने उससे पूछा, “पानी की बोतल कितने की है?” उसने कहा, “एक बोतल पानी तीस रुपए।”

अम्मी बोलीं, “कोरोना के आते ही हर चीज़ का रेट बढ़ा दिया क्या? एक तो पहले ही काम नहीं है, ऊपर से हर चीज़ पर फालतू पैसा जा रहा है। ”अम्मी ने चिड़चिड़ाते हुए पानी की बोतल खरीद ही ली और घूरते हुए बोतल मुझे दी। मैंने पानी पिया। कुछ देर बाद अलीगढ़ स्टेशन भी आ गया।

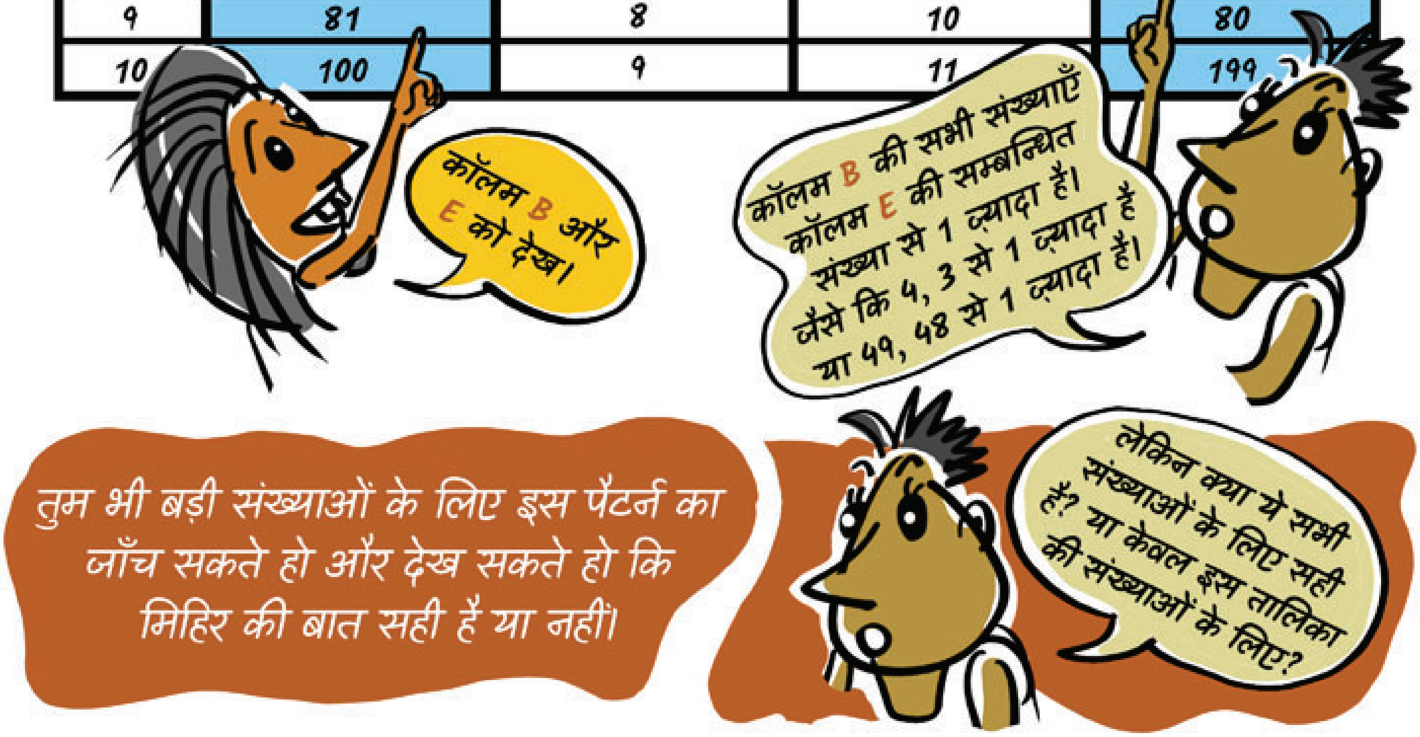
वहाँ पर भी कोई खास रौनक नहीं थी। फलवाले, मूँगफलीवाले, ब्रेड पकौड़ेवाले सब गायब थे। पहले सब खड़े दिखते थे और अब्बू हमें ब्रेड पकौड़े खिलाते और घर के लोगों के लिए फल खरीदते। लेकिन अब तो वहाँ कुछ भी नहीं था। कोई रुक भी नहीं रहा था स्टेशन पर, बस सभी को वहाँ से निकलने की जल्दी लगी थी।

हमने पापा के साथ फुट ओवरब्रिज से स्टेशन पार किया। फिर बैटरी रिक्शा में बैठकर नानी के घर की तरफ चल दिए। मैं सारे रस्ते यही सोचती रही कि आखिर यह कैसा सफर था, जिसमें हम सब बस अपने आपको बचाते ही रहे। यहाँ भी रास्ते एकदम सूने-सूने से थे। कोरोना ने यहाँ की भी तस्वीर बदलकर रख दी थी।

शानिता, श्री गुरु हरिकृष्ण कन्या उच्चतम माध्यमिक विद्यालय, तकिया काले खाँ, दिल्ली में आठवीं कक्षा में पढ़ती हैं। एक साल से अंकुर के 'युवती कलेक्टिव' से जुड़ी हैं। उन्हें लिखना-पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।



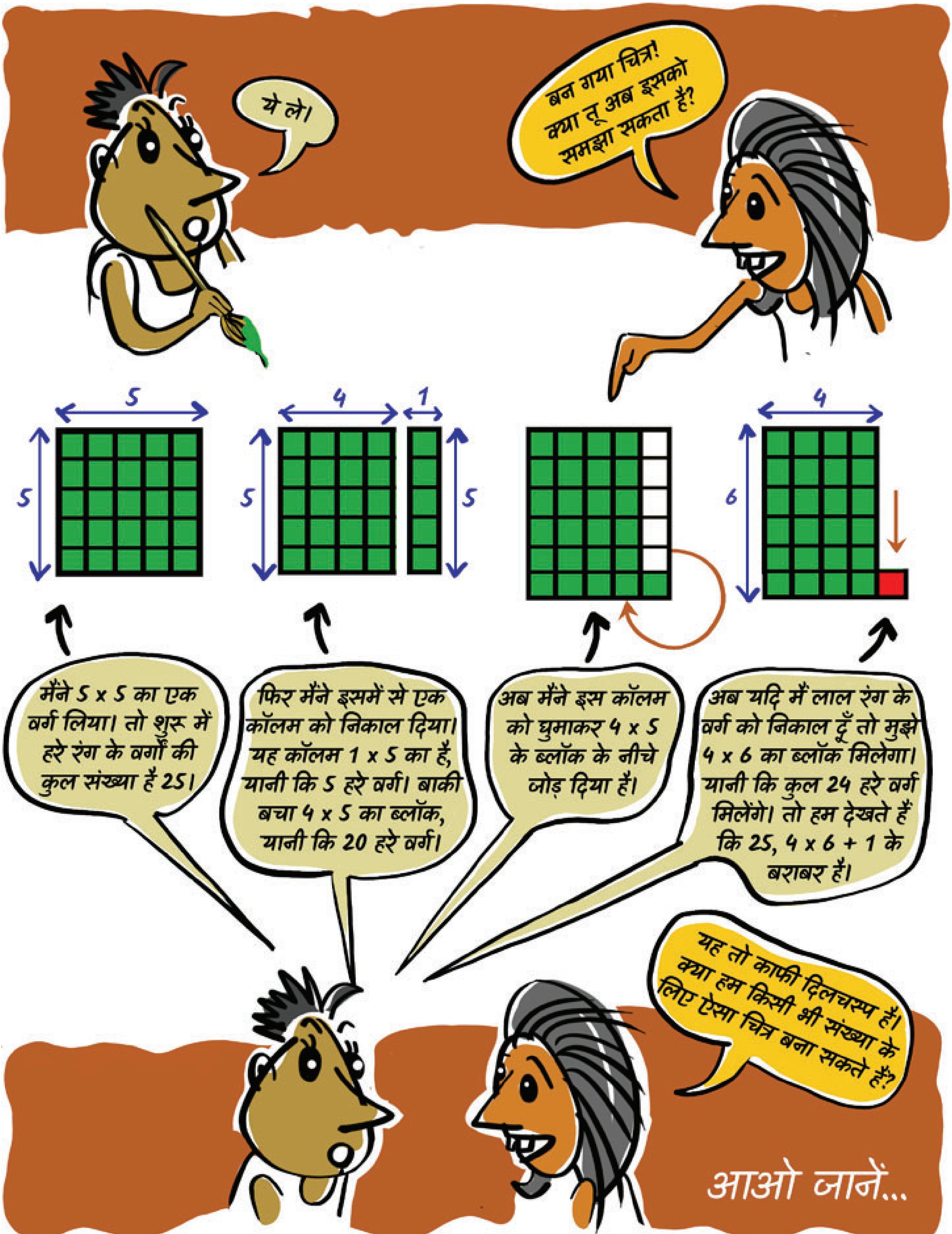
A	B	C	D	E
संख्या	संख्या का वर्ग (संख्या x संख्या)	संख्या के पहले की संख्या	संख्या के बाद की संख्या	C व D का गुणनफल
2	4	1	3	3
3	9	2	4	8
4	16	3	5	15
5	25	4	6	24
6	36	5	7	35
7	49	6	8	48
8	64	7	9	63
9	81	8	10	80
10	100	9	11	199

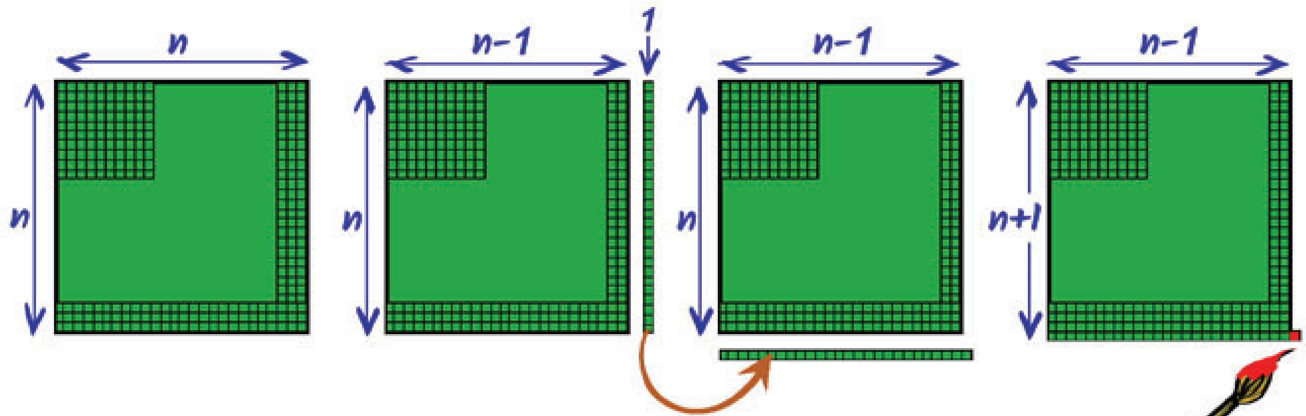


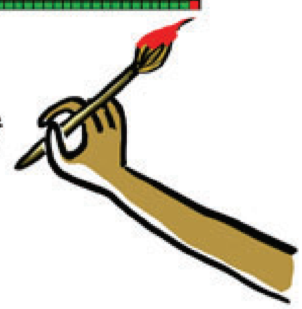


A	B	C	D	E
संख्या	[illegible]ा वर्ग ([illegible]संख्या)	संख्या के पहले की संख्या	संख्या के बाद की संख्या	C व D का गुणनफल
2	[illegible]	1	3	3
3	[illegible]	2	4	8
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
.	.	.	.	.
1000	1000x1000 = 1000000	999	1001	1001x999 =999999




ये ले।
बन गया चित्र! क्या तू अब इसको समझा सकता है?
5
5
4
1
5
5
4
6
मैंने 5 x 5 का एक वर्ग लिया। तो शुरू में हरे रंग के वर्गों की कुल संख्या है 25।
फिर मैंने इसमें से एक कॉलम को निकाल दिया। यह कॉलम 1 x 5 का है, यानी कि 5 हरे वर्ग। बाकी बचा 4 x 5 का ब्लॉक, यानी कि 20 हरे वर्ग।
अब मैंने इस कॉलम को घुमाकर 4 x 5 के ब्लॉक के नीचे जोड़ दिया है।
अब यदि मैं लाल रंग के वर्ग को निकाल दूँ तो मुझे 4 x 6 का ब्लॉक मिलेगा। यानी कि कुल 24 हरे वर्ग मिलेंगे। तो हम देखते हैं कि 25, 4 x 6 + 1 के बराबर है।
यह तो काफी दिलचस्प है। क्या हम किसी भी संख्या के लिए ऐसा चित्र बना सकते हैं?
आओ जानें...





क्या तुम बता सकते हो कि यह पैटर्न क्यों काम करता है? हरेक पंक्ति और कॉलम में वर्गों की संख्या पर ध्यान दो।

बड़े वर्गों के लिए ऐसे चित्र बनाने की कोशिश करो और देखो कि क्या यह तरीका उनके लिए भी काम करता है। इस तरीके को कहते हैं -

शब्द रहित प्रमाण (proof without words)





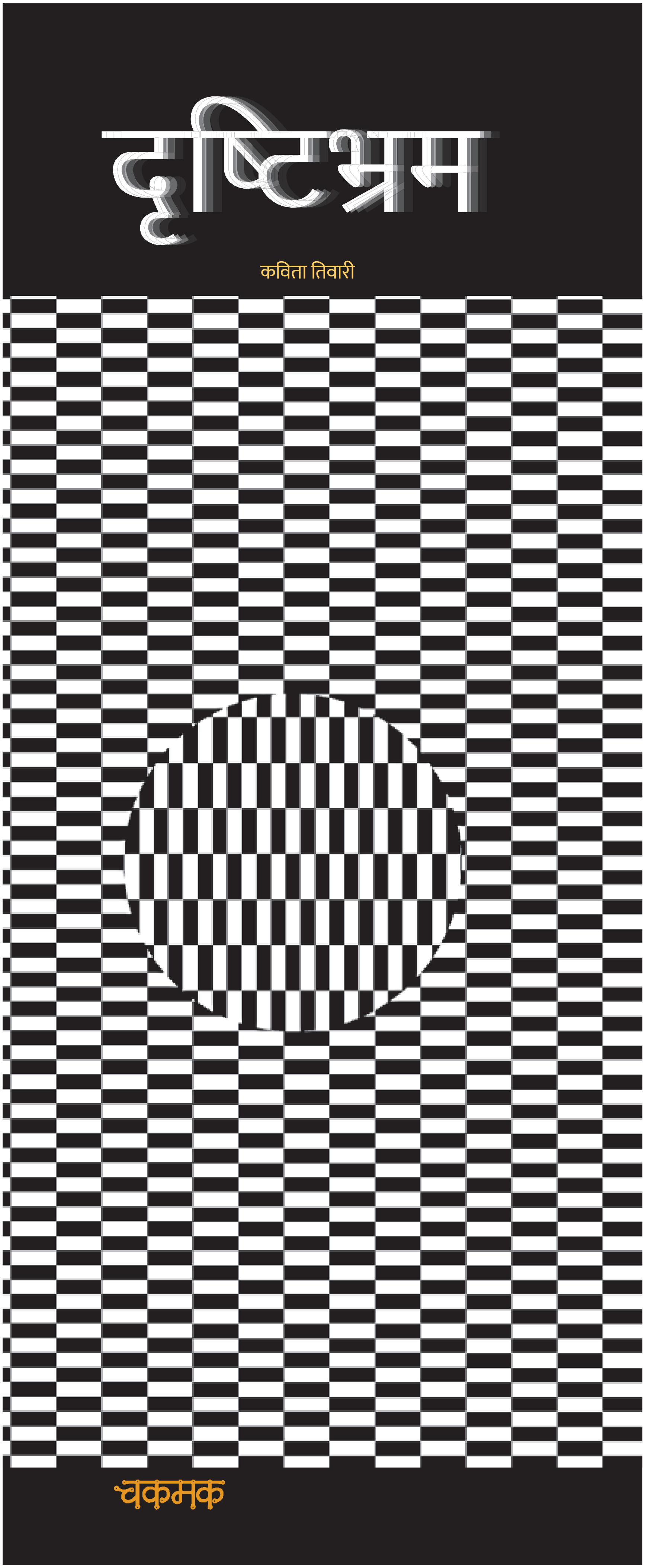
1. क्या तुम बता सकते हो कि यह 'प्रमाण' क्यों काम करता है?

2. संख्या का वर्ग = [(संख्या के पहले की संख्या) × (संख्या के बाद की संख्या)] + 1;
क्या तुम इस कथन को सिद्ध करने का कोई और तरीका सोच सकते हो?

3. नीचे दी गई वर्गों की तालिका देखो और ऐसे अन्य पैटर्नों को खोजकर हमें भेजो। यह भी देखना कि क्या तुम्हारे पैटर्न और संख्याओं के लिए भी काम करते हैं। इन्हें सिद्ध करना और इनके बारे में भी हमें लिखना।

संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
संख्या का वर्ग	1	4	9	16	25	36	49	64	81	100	121	144	169	196	225	256	289	324	361	400

अनुवाद: कविता तिवारी



कवर पर दिए गए चित्र में तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है? इसे देखते हुए तुम्हें ऐसा लगेगा जैसे कि इसमें समुद्र की लहरों जैसी गति हो रही है। पर यदि तुम कुछ सैकंड के लिए बैंगनी रंग की किसी भी एक बूँद पर अपनी नज़रें टिकाओ तो पाओगे कि लहरों जैसी यह गति रुक गई है।

अमूमन हम जो कुछ भी अपनी आँखों से देखते हैं उसे सही मानने के आदी होते हैं। क्योंकि हमें हमेशा यह यकीन होता है कि हमारी नज़रें हमें धोखा नहीं दे सकतीं। लेकिन कुछ चित्र हमारे द्वारा ऐसी चीज़ों को देखने का कारण बन सकते हैं, जो असल में उस चित्र में मौजूद नहीं है। या फिर ऐसा भी हो सकता है कि जो चीज़ उस चित्र में वाकई में है उसे देखने में हमारी नज़र चूक जाए। ये नज़रों का खेल असल में हमारे मस्तिष्क का काम है जो इन चित्रों को 'देखता' है।

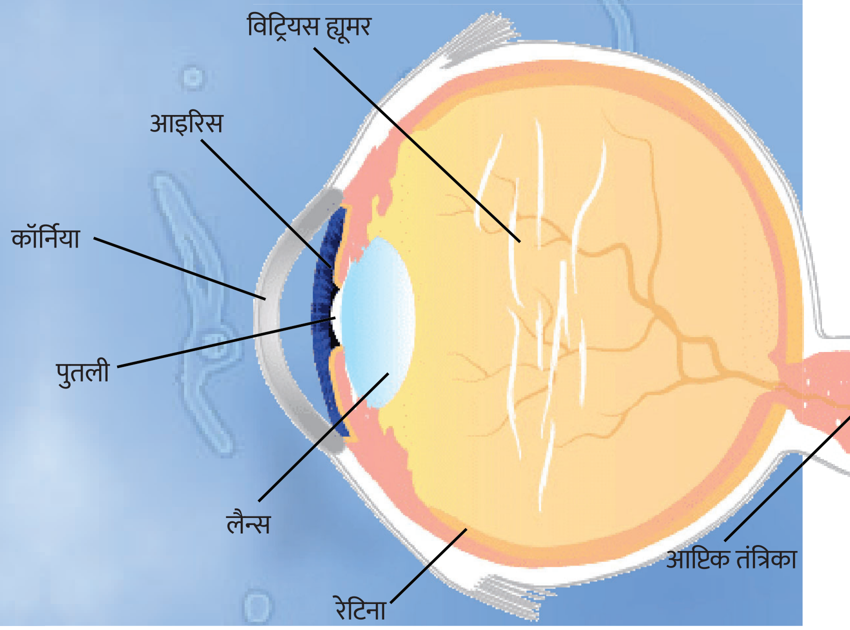
इस तरह के चित्रों को दृष्टिभ्रम (illusion) कहते हैं। दृष्टिभ्रम यानी दिखे कुछ, और हो कुछ और। यह चित्र हमारे देखने में एक तरह का भ्रम पैदा करते हैं। कभी-कभी यह भ्रम आसानी से दिख जाते हैं, तो कभी-कभी किसी खास एंगल से देखने पर ही यह नज़र आते हैं। कभी-कभी कुछ चीज़ों को अनदेखा करके उनके पार किसी खास चीज़ पर फोकस करने पर ही ये नज़र आते हैं। पर जो भी हो इस तरह के चित्र हमें खूब आकर्षित करते हैं।

इस पेज पर दिया गया यह चित्र भी दृष्टिभ्रम का ही एक उदाहरण है। इसे अलग-अलग एंगल से देखने की कोशिश करो। तुम्हें क्या नज़र आया हमें लिखना। अगर तुम भी इस तरह का कोई चित्र बनाओ तो हमें ज़रूर भेजना।

आँखों में जो तैरते दिखते हैं — एक दृष्टिभ्रम?

जितेश शेल्के

अनुवाद: विनता विश्वनाथन



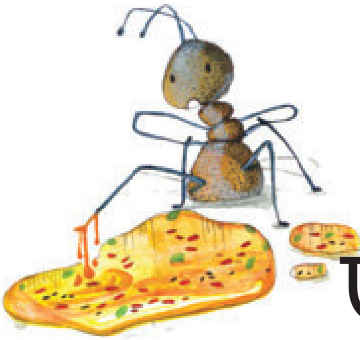
क्या तुम्हें पता है कि सबसे दूर स्थित चीज़ जिसे तुम बिना टेलिस्कोप के देख सकते हो, वो है एन्ड्रोमीडा आकाशगंगा (गैलेक्सी)। ये पृथ्वी से 26 लाख प्रकाश वर्ष दूर है*। और सबसे करीब की चीज़? वो तो तुम्हारी आँखों के अन्दर है!

आँखों के बिलकुल सामने तुमने कभी धब्बों, कणों या फिर इल्लियों जैसा कुछ देखा है? अगर नहीं तो ऐसा करना — पहले नीले आसमान या फिर हल्के रंग की दीवार की ओर देखना और आँखों को ढीला होने देना। फिर किसी एक चीज़ पर रुके बिना इधर-उधर नज़रें घुमाना। तुम्हें अपने सामने गोल या फिर रिबिन सरीखी चीज़ें दिखेंगी। इन्हें तुम ध्यान-से देखने की कोशिश करोगे तो एकदम तेज़ी-से सरक जाएँगी। ये क्या हो रहा है? ये कोई दृष्टिभ्रम (optical illusion) नहीं हैं...

इसे समझने के लिए आँखों की संरचना पर एक नज़र डालते हैं (उपरोक्त चित्र देखो)। आँखों का सामने वाला हिस्सा कॉर्निया कहलाता है। इससे रोशनी आँखों के अन्दर आती है। इसके पीछे आँखों के बीच पुतली होती है जो ज़्यादातर लोगों में गहरे रंग की होती है। पुतली के चारों ओर एक रंगीन घेरा होता है जिसे आइरिस कहते हैं। आइरिस पुतली को फैलाकर-सिकुड़कर यह नियंत्रित करता है कि आँखों के अन्दर कितनी रोशनी आएगी। इनके पीछे होता है हमारा दर्पण जैसा लैन्स जो प्रकाश को मोड़ता है ताकि वो आँखों के अन्दर केन्द्रित हो जाए। रेटिना आँखों के अन्दर व पीछे का हिस्सा है। जब इसकी कोशिकाएँ प्रकाश से उत्तेजित हो जाती हैं तो ऑप्टिक तंत्रिका के ज़रिए ये हमारे मस्तिष्क तक सन्देश पहुँचाती हैं। फिर हमारा मस्तिष्क तय करता है कि हम क्या देख रहे हैं।

लैन्स व रेटिना के बीच के हिस्से में एक द्रव्य भरा होता है — विट्रियस ह्यूमर। ये 99% पानी का बना हुआ होता है और पारदर्शी होता है। बाकी के 1% में कुछ रसायन हैं जिनमें कोलैजन प्रोटीन के रेशे भी शामिल हैं। जब किसी वस्तु से टकराकर प्रकाश आँखों के अन्दर जाता है तो इस विट्रियस ह्यूमर से गुज़रकर ही उसकी छवि रेटिना पर बनती है। जब इस द्रव्य के कोलैजन रेशें अलग-अलग ना रहकर साथ में जम जाते हैं तो ये आँखों में आते हुए प्रकाश को रोकते हैं। और इनकी परछाई रेटिना पर पड़ती है। जब हम आसमान या फिर हल्के रंगों की परतों को देखते हैं तो ये हमें 'दिख' जाते हैं। इन्हें *आई-फ्लोटर्स* कहा जाता है। उम्र के साथ इनकी मात्रा बढ़ती है। ज़्यादातर लोग इन रेशों को देख सकते हैं और बहुत ही कम लोगों में ये दृष्टि को बाधित करते हैं।

* प्रकाश एक वर्ष में 9 लाख करोड़ किलोमीटर की दूरी तय करता है। इतनी दूरी तय करने में हमें 37,200 वर्ष लग जाते हैं।



एक ही थाली में खाना...

सुशील शुक्ल

चित्र: शुभश्री माथुर

आम तौर पर मैं रोटी गरम करके खाता हूँ। दाल या सब्ज़ी कभी-कभी गरम कर लेता हूँ। आम तौर पर ताज़ा खाना कम खाया है। कभी-कभी जाने क्या होता है कि मुझे एकदम ताज़ा लगने लगता है। लगता है कि बस मैं आज ही पैदा हुआ हूँ। बस आज से मैंने दुनिया देखना है। ताज़ा लगना बहुत अच्छा लगता है। इसलिए मैं जब तक ताज़ा लगे तब तक लगने देता हूँ। ऐसा क्यों हुआ सोचकर उसे गँवा नहीं देता। तो मैं थाली परोसकर बैठा। फिर सोचा, "अरे! पानी का गिलास लाना तो भूल गया।" उठा तो सोचा एक चम्मच अचार भी लेता आऊँ।





दाल में आज हींग एकदम कम थी। कम होकर भी अच्छी लग रही थी। जीवन में कितनी चीज़ें हैं जो कम होकर अच्छी लगती हैं। फिर सोचा कि अगर अच्छी लग रही हैं तो कम कैसे हुई? उसे तो उतना ही होना था। पर अभी उसके ज़्यादा हो जाने में समय था। वह थोड़ी बढ़कर अभी ज़्यादा अच्छी लग सकती थी। मैंने जैसे ही अगले कौर के लिए थाली को देखा वहाँ एक चींटी टहल रही थी। चींटी को देखकर हमेशा मुझे खुशी होती है। खुशी होती कि वह मुझे दिखी। एक बार मेरी पीठ पर एक फुंसी हो गई थी। तब मैं सातवीं में था। माँ ने पीठ पर हाथ फेरा तो उसे देखा। फिर बोलीं कि तुम बहुत लापरवाह हो। तुमने देखा क्यों नहीं इसे? मुझे लगा कि पीठ को कोई कैसे देख सकता है? पर तब माँ ने कहा कि अपनी पीठ तो हमेशा दिखनी चाहिए। तब से जो चीज़ नहीं दिखती लगता है कि वह मेरी पीठ पर है। बोझ की तरह। ...तो चींटी दिखी तो खुशी हुई। कई बार तो जब खुश होने के लिए कोई वजह नहीं मिलती तो मैं चींटी को ढूँढने निकलता हूँ। वे अकसर अकेली नहीं मिलती। कई-कई मिलती हैं। कई-कई गुना खुशी को लेकर चलती हुई।

चींटी बाहर होती तो मैं थाली उसकी तरफ थोड़ा सरका देता। मगर वह थाली के अन्दर थी। मुझे नहीं पता था कि उसे खाने के लिए बोलूँ, क्या करूँ? थाली में कोई मीठी चीज़ नहीं थी। मुझे लगा कि चीनी के कुछ दाने ले आऊँ और थाली में परोस दूँ। पर उसे पता नहीं अच्छा लगेगा कि नहीं। मैंने रोटी का एक बहुत छोटा-सा टुकड़ा उसके पास रखा। कई बार ऐसी खबरें आती हैं कि फलाँ व्यक्ति के सम्मान में उनकी ऊँचाई बराबर केक या कोई और चीज़ बनवाई है। हालाँकि मुझे सम्मान का यह तरीका अजीब-सा लगता है, पर चींटी के लिए इससे कम मैं कुछ कर नहीं सकता था। उसने रोटी के टुकड़े का मुआयना किया। पैर रगड़े। टुकड़े को इधर-उधर धकेला। फिर उसे खींचकर ले जाने लगी। थाली के बाहर। एक बार एक बच्चे ने मुझसे कहा कि उसने चींटी को बिस्किट का एक टुकड़ा दिया तो उसने शुक्रिया बोला। और फिर उसने अँगूठे के नाखून को तर्जनी के नाखून से मिलाकर बताया – इतना-सा शुक्रिया। दोनों नाखून सटे थे। उन्हें ज़ोर-से सटाया जा सकता था। तो सिर्फ सटे नाखून और ज़ोर-से सटाए नाखून के बीच की जगह बराबर शुक्रिया। मैं उसकी बात से बस इतना ही समझ सकता था कि चींटी शुक्रिया कहती है और उसका शुक्रिया बहुत छोटा होता है। मैंने उसे कहा कि मुझे तो चींटी ने कभी शुक्रिया नहीं कहा। तो वह हँसते हुए बोला, "आपने सुना ही नहीं तो वो क्या करे..." मैं हैरत से भरा रहा कि उसने इतनी कम उमर में ही सुन लेने का ऐसा हुनर पैदा कर लिया है...





भाग - 10

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी

अनुवाद : लालबहादुर वर्मा

अब तक तुमने पढ़ा...
लेखक को बचपन में बड़ों ने चित्र बनाने से हतोत्साहित किया तो वह पायलट बन बैठा। अपनी एक यात्रा के दौरान उसे रेगिस्तान में जहाज़ उतारना पड़ा। वहाँ उसकी भेंट एक नन्हे राजकुमार से हुई, जो किसी दूसरे ग्रह का निवासी है। राजकुमार ने लेखक को अपने ग्रह के बारे में बहुत-सी विचित्र बातें बताईं। आकाश से विचरते हुए उसने कुछ अलग-अलग ग्रहों में जाने के बारे में सोचा। यात्रा के सातवें दौर में वह पृथ्वी पर पहुँचा। रेगिस्तान, पहाड़ और बर्फीले मैदानों में भटकते-भटकते उसने एक बगीचे में अपने फूल जैसे हज़ारों फूलों को देखा यह देखकर वह उदास हो गया। फिर उसकी मुलाकात एक लोमड़ी से हुई और वे दोनों दोस्त बन गए।
अब आगे...

"नमस्कार।"

"नमस्कार" प्वाइन्ट्समैन ने कहा। "क्या कर रहे हो यहाँ?" "मैं हज़ारों के झुण्ड में यात्रियों को चुनता हूँ। गाड़ियों को दाएँ-बाएँ भेजता हूँ जिनमें यात्री होते हैं।" एक तूफान मेल बिजली की तरह गरजती और पूरे केबिन को हिलाती हुई गुज़र गई।

"ये लोग बड़ी जल्दी में हैं। क्या चाहते हैं ये?" राजकुमार ने पूछा।

"ड्राइवर को खुद नहीं मालूम।"

दूसरी ओर से एक और तेज़ गाड़ी शोर मचाती गुज़र गई।

"अरे! ये लौट भी आए?" राजकुमार ने पूछा।

"वही लोग नहीं थे ये। यह तो दूसरी गाड़ी थी।"

"जहाँ थे वहाँ ये सन्तुष्ट नहीं थे क्या?" राजकुमार ने पूछा।

"आदमी जहाँ है वहाँ कभी सन्तुष्ट नहीं रहता।"

फिर एक गाड़ी गुज़री।

"ये लोग पहले यात्रियों के पीछे जा रहे हैं?"

"ये कुछ करते नहीं। अन्दर बैठे सो रहे होंगे या जम्हाई ले रहे होंगे। बस बच्चे खिड़की से नाक रगड़ते कुछ देख रहे होंगे।"



"बस बच्चे जानते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए।" राजकुमार ने कहा, "चिथड़ों से बनी गुड़िया के पीछे घण्टों लगे रहते हैं और वो उनके लिए महत्वपूर्ण बन जाती है। कोई उसे ले ले तो रोने लगते हैं..."

"वे ही अच्छे हैं" प्वाइन्ट्समैन ने कहा।

"नमस्कार।"

"नमस्कार" दुकानदार ने जवाब दिया।

दुकानदार ऐसी गोली बेच रहा था जिससे प्यास शान्त हो जाए – हफ्ते में एक बार खाइए और प्यास लगे ही ना। "क्यों बेच रहे हो यह सब?" राजकुमार ने पूछा!

"कितना वक्त बचता है इससे," दुकानदार बोला, "जानकार लोगों ने हिसाब लगाया है हफ्ते में तिरपन मिनट बचते हैं इससे।"

"इन तिरपन मिनटों का क्या इस्तेमाल है?"

"इन्सान जो चाहे करे इनका।"

"यदि तिरपन मिनट बिताने हों तो मैं धीरे-धीरे एक फव्वारे के पास चला जाऊँगा..."

मशीन बिगड़े आठ दिन हो गए थे। राजकुमार से दुकानदार की कहानी सुनते समय मैंने पानी का आखिरी घूँट पी लिया था।

"तेरी कहानी दिलचस्प है पर मेरा जहाज़ अभी तक ठीक नहीं हुआ और मेरे पास पीने को अब कुछ नहीं बचा है। एक फव्वारे की ओर चलने में मुझे बड़ी खुशी होगी।"

"मेरी दोस्त लोमड़ी...," मुझसे राजकुमार बोला।

"नन्हे-मुन्ने छोड़ो लोमड़ी को।"

"क्यों?"

"क्योंकि हम प्यास से मरने वाले हैं।" मेरा तर्क उसकी समझ में नहीं आया। वह बोला, "मर जाएँगे तो क्या हुआ! एक दोस्त मिला था इससे सन्तोष नहीं होता। मुझे... मुझे तो बड़ी खुशी है कि मुझे कोई दोस्त मिला था लोमड़ी जैसा..."

मैंने सोचा यह खतरे से बेखबर है। इसे कभी न भूख लगेगी, न प्यास। बस थोड़ी-सी धूप चाहिए।

मुझे देखकर उसने जवाब दिया, "मुझे भी प्यास लगी है। आओ, कहीं कुआँ ढूँढें।"

मुझे एक प्रकार की निराशा हुई। कितनी बेकार की बात है। इस प्रकार इस रेगिस्तान में कुआँ ढूँढना! फिर भी हम चल पड़े। कई घण्टे चलते रहे। रात हो गई। तारे जगमगाने लगे। मुझे प्यास की वजह से बुखार था, मुझे लग रहा था। जैसे मैं स्वप्न लोक में होऊँ। राजकुमार के शब्द मेरी यादों में नाच-से रहे थे।

"तुझे भी प्यास लगी है ना?" मैंने पूछा।

मेरे सवाल का जवाब नहीं मिला। उसने मुझसे सीधे-से कहा, "पानी दिल की मज़बूती के लिए भी



ज़रूरी है...” मैं उसका जवाब समझा नहीं। पर मैं चुप हो गया।

मुझे अच्छी तरह मालूम था कि उससे सवाल नहीं पूछना चाहिए था।

वह थक गया था। बैठ गया। मैं भी उसके पास ही बैठ गया। कुछ देर चुप रहा। फिर वह बोला, “सितारे एक फूल की वजह से सुन्दर हैं जो दिखाई भी नहीं पड़ता।”

मैंने इस बात की पुष्टि की और चुपचाप चाँदनी में रेत की सिलवटों को देखता रहा। “कितना सुन्दर है रेगिस्तान!” राजकुमार बोला।

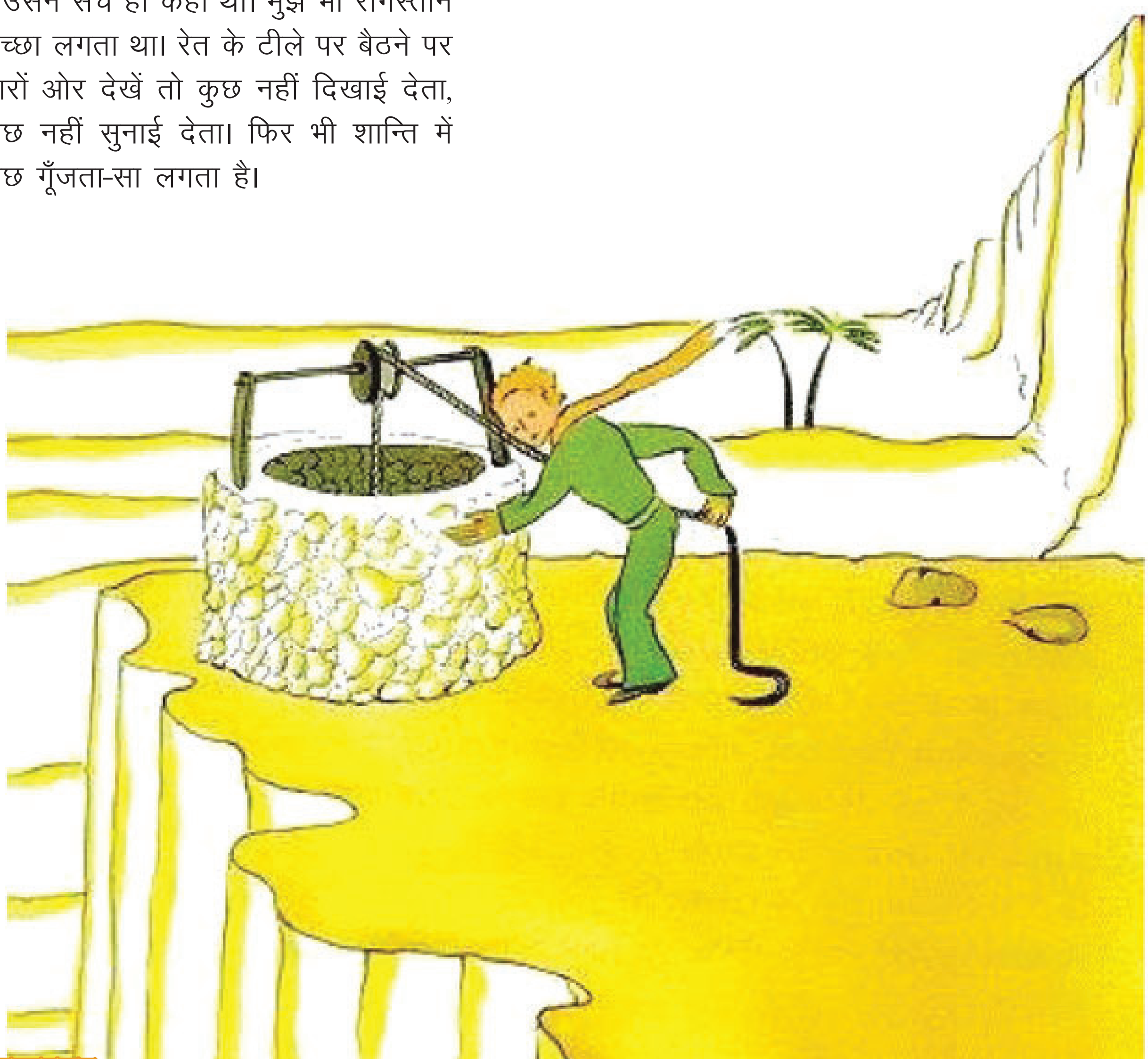
उसने सच ही कहा था। मुझे भी रेगिस्तान अच्छा लगता था। रेत के टीले पर बैठने पर चारों ओर देखें तो कुछ नहीं दिखाई देता, कुछ नहीं सुनाई देता। फिर भी शान्ति में कुछ गूँजता-सा लगता है।

“रेगिस्तान इसलिए सुन्दर है कि इसमें कहीं एक सोता छिपा है...”

अचानक मुझे रेत की चमक का रहस्य समझ में आ गया। मुझे बड़ा अचरज हुआ। जब मैं छोटा था तो एक पुराने घर में रहता था। उसके बारे में प्रचलित था कि उसके नीचे एक खज़ाना दबा पड़ा है। यह सच है कि न किसी ने उसे पाया, न ढूँढा। लेकिन एक सम्मोहन था उस किंवदन्ती में कि मेरे घर में एक रहस्य छुपा है....

“हाँ,” मैंने कहा, “चाहे घर हो, या तारे या रेगिस्तान उनके सौन्दर्य का कारण एक अदृश्य होता है।”

“तू मेरी लोमड़ी की बात से सहमत है इससे मुझे खुशी हुई,” वह बोला।



राजकुमार थककर सो गया था। मैंने उसे बाँहों में उठा लिया और चल पड़ा। मेरा मन भर आया था। मुझे लग रहा था कि जैसे वह एक कमज़ोर खजाना हो। ऐसा लग रहा था जैसे इससे दुर्बल कोई चीज़ ही न हो इस धरती पर। चाँदनी फैली हुई थी। मैंने उसका पीला ललाट, बन्द आँखें, हवा में हिलते उसके घुँघराले बाल देखे और सोचने लगा, "जो दिखाई दे रहा है वह केवल ऊपरी सतह है। मुख्य चीज़ तो अदृश्य है...!"

उसके अधखुले होंठों में से एक मुस्कराहट झाँक रही थी। मैंने सोचा, "इस राजकुमार की जिस बात से मैं इतना प्रभावित हूँ वह है इसके मन में एक फूल के लिए प्यार। उस गुलाब के फूल की छाया इस पर उसी तरह व्याप्त है जैसे किसी चिराग की लौ।" मुझे वह और कमज़ोर लगने लगा। लौ को हवा से बचाना चाहिए वरना एक झोंके में बुझ सकती है। इसी तरह चलते-चलते इधर सूरज की किरणें फूटीं, उधर मुझे एक कुआँ अच्छा नज़र आया।

राजकुमार बोला, "इन्सान तेज़ गाड़ियों में भागते-फिरते हैं, बिना जाने कि उन्हें किस चीज़ की तलाश है। बस कुछ करते रहते हैं कोल्हू के बैल की तरह..."

फिर उसने कहा, "क्या ज़रूरत है..."

हम लोग जिस कुएँ पर पहुँचे थे वह सहारा रेगिस्तान के अन्ध कुओं की तरह नहीं था। यहाँ के कुएँ तो सीधे से रेत में किए गए सुराख-से लगते हैं। यह तो किसी गाँव का कुआँ लगता था। लेकिन गाँव कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था। मुझे लगा कि वह सब सपना हो।

"कितनी अजीब बात है! सब कुछ तैयार है – घिरनी, रस्सी, बालटी।" उसे हँसी आ गई। उसने रस्सी को छूकर देखा, घिरनी पर रस्सी डालकर उसे घुमाने लगा। उससे आवाज़ होने लगी।

"तूने सुना हम लोगों ने कुएँ को जगा दिया और अब वह गा रहा है।"

मैं नहीं चाहता था कि उसे कष्ट हो। "तेरे लिए बहुत भारी है वह। ला मैं भरता हूँ पानी।"

मैंने धीरे-धीरे बालटी को कुएँ में उतारा। पानी पर बालटी रुकी। मेरे कानों में घिरनी के फिसलने का संगीत गूँज रहा था और हिलते पानी में धूप की छाया हिल रही थी।

"मुझे इस पानी की प्यास है। मुझे पानी दो...।" मेरी समझ मैं आ गया कि वह क्या ढूँढ रहा था।

मैंने उसके होंठों तक बालटी उठाई। उसने आँखें बन्द करके गट-गट करके पानी पी लिया। उसका पानी पीना उत्सव की तरह भला लग रहा था।

वह साधारण पानी नहीं था। वह सितारों की छाँव में हमारी यात्रा, घिरनी के संगीत और बाजुओं के श्रम से जन्मा था। मन के लिए बलदायक था – जैसे एक उपहार। जब मैं छोटा था तो क्रिसमस में घर में सजा उपहारों से लदा पेड़, गिरजाघर में प्रार्थना का संगीत, मुस्कराहटों की मधुरता मिलकर उपहारों से मिली खुशी पर छा जाते थे।

अगले अंक में जारी...

उसके अधखुले होंठों में से एक मुस्कराहट झाँक रही थी। मैंने सोचा, "इस राजकुमार की जिस बात से मैं इतना प्रभावित हूँ वह है इसके मन में एक फूल के लिए प्यार। उस गुलाब के फूल की छाया इस पर उसी तरह व्याप्त है जैसे किसी चिराग की लौ।"



क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

कुछ बच्चे रोज़ घर से स्कूल जाते हैं, कुछ बच्चे बोर्डिंग में रहते हैं। अगर तुम्हें इन दोनों में से अपने लिए स्कूल चुनना हो तो तुम कौन-सा चुनोगे, और क्यों? कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

मैं बोर्डिंग स्कूल चुनूँगी क्योंकि घर की समस्याएँ या परिस्थितियाँ पढ़ाई से मेरा ध्यान भटका देती हैं। मुझे पढ़ने की आज़ादी चाहिए। यदि मुझे आठ घण्टे काम करना पड़ता है तो कोई फर्क नहीं पड़ता। पर मुझे चार घण्टे पढ़ाई का समय चाहिए।

रानो देवी, अपना स्कूल, मुरारी सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मैं घर से स्कूल जाना चुनूँगी क्योंकि हमें घर से दूर नहीं रहना पड़ेगा। हम स्कूल खत्म होने के बाद अपने घरवालों से मिल सकते हैं। अपने छोटे भाई-बहनों के साथ खेल सकते हैं। और हमें अकेलापन भी महसूस नहीं होगा।

कशिश, सातवीं, दीपालया कम्युनिटी लाइब्रेरी, गोलाकुआँ, दिल्ली

अगले अंक के लिए सवाल है—

तुम्हें क्या लगता है क्या भूत सच में होते हैं? अगर हाँ तो क्यों और अगर नहीं तो क्यों नहीं?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश



चित्र: जिया, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मैं रोज़ घर से स्कूल जाना चाहता हूँ क्योंकि मेरे पापा से उनके साथी कहते हैं कि लड़के को मत पढ़ाओ। इसे किसी काम में लगा दो जिससे कि कुछ पैसे कमाने लगेगा। पढ़ाई से कुछ नहीं होता। इसलिए मैं पढ़ाई कर अपने पापा के दोस्तों की गलतफहमी दूर करना चाहता हूँ। मैं दिखाना चाहता हूँ कि पढ़ाई के क्या फायदे हैं।

कुन्दन, दूसरी, अपना स्कूल, सम्राट सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश



चित्र: ख़ुशी दोशी, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मुझे बोर्डिंग का स्कूल पसन्द है क्योंकि अगर कुछ अलग सिखाया हो और वो ध्यान में ना रहे ऐसा हो तो उसका बार-बार सराव (प्रैक्टिस) करने से वो ध्यान में रहेगा ना। पर कुछ बच्चे क्या करते हैं कि उसका सराव करने की बजाय वह घर जाकर खेलते हैं। पर बोर्डिंग स्कूल में रोज़ कोई ना कोई शिक्षक आकर देखते हैं कि सिखाए गए नए भाग का बच्चे सराव कर रहे हैं कि नहीं। वहाँ बच्चे शिक्षकों के डर से नए भाग का सराव करते हैं। इसलिए मुझे बोर्डिंग स्कूल पसन्द है।

रुद्र देवरे, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मैं तो रोज़ जाने वाला स्कूल चुनूँगी। क्या पता वहाँ बोर्डिंग में खाना स्वस्थ ना मिलता हो। वहाँ मम्मी-पापा से भी नहीं मिल पाएँगे। वहाँ सब काम खुद करना पड़ता है। खाना भी खुद ही बनाते हैं। कपड़े भी खुद ही धोने पड़ते हैं। और वहाँ पढ़ाई ना करने पर मार भी पड़ती है, वो भी बहुत खतरनाक।

लक्षित आर्या, सातवीं, मंज़िल संस्था, दिल्ली

अगर मुझे स्कूल चुनना पड़े तो तो मैं घर से स्कूल जाने को चुनूँगा क्योंकि मुझे पैदल चलना अच्छा लगता है और सुबह-सुबह ठण्डी हवा में घूमना भी।

हेमन्त सिरोलिया, चौथी, होली एंजल स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

मैं बोर्डिंग स्कूल चुनूँगी क्योंकि वहाँ सब कुछ फ्री होता है। कपड़े फ्री, खाना फ्री। कम से कम घर के पैसे तो बचेंगे।

मिष्ठी, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मुझे दोस्तों के साथ खेलना, घूमना, नाचना बहुत पसन्द है। मैं ज़्यादा समय दोस्तों के साथ ही बिताती हूँ। इस कारण मम्मी मुझे बहुत पीटती हैं कि घर समय पर आया करो और पढ़ाई किया करो। इसलिए मैं होस्टल में रहना चाहूँगी जहाँ मैं मम्मी से पिटाई ना खाऊँ और दोस्तों के साथ हर समय मस्ती करूँ।

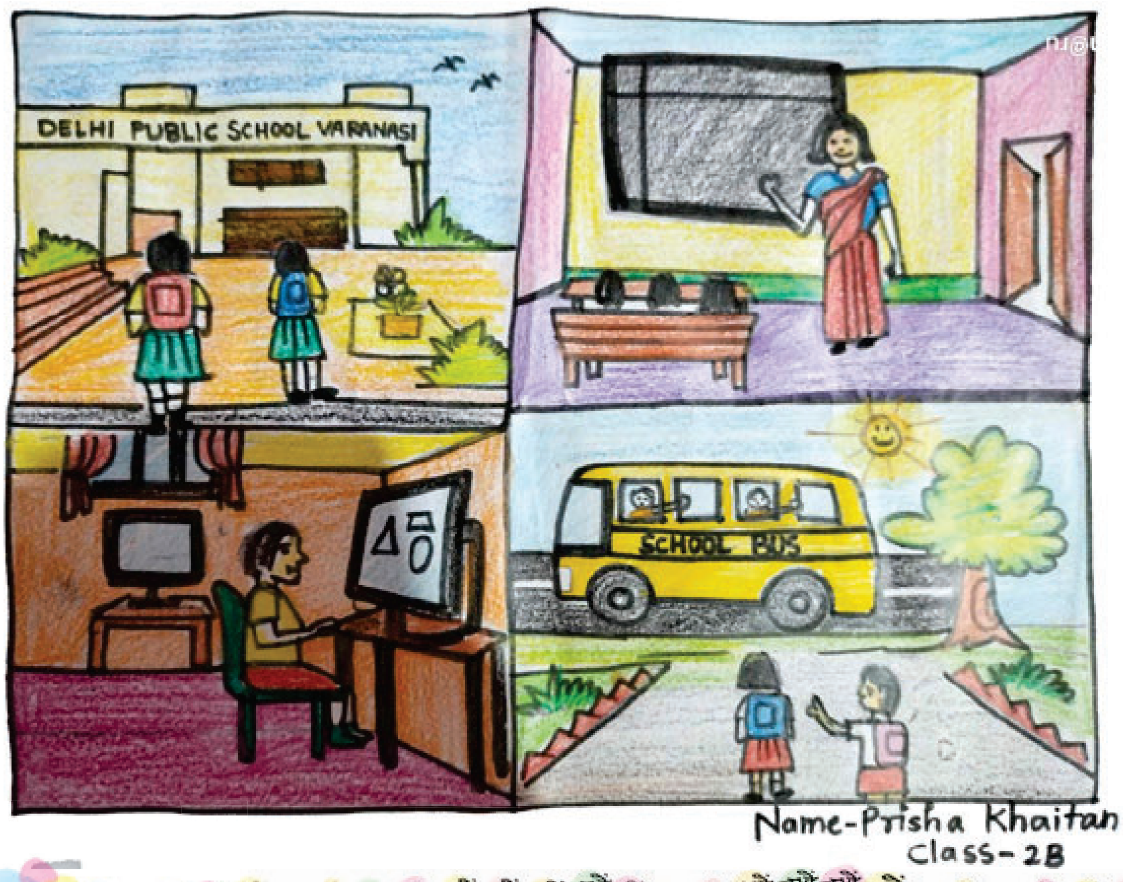
अनु कुमारी, चौथी, नरेन्द्रपुर, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

बोर्डिंग स्कूल में अपना काम खुद करते हैं। अपने कपड़े खुद धुलने होते हैं, अगर फट जाएँ तो खुद ही सिलने होते हैं। ऐसे वाले स्कूल में तो घर आने पर मम्मी ये सब कर देती हैं। वहाँ खुद तैयार होना होता है। टाइम से खाना खाना होता है, टाइम से सोना होता है। घर पर तो कभी खाना देर से बनता है, और कभी टीवी के चक्कर में देर से सोते हैं। इसलिए मैं बोर्डिंग स्कूल चुनूँगा।

आदित्य, सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मैं घर से स्कूल जाना चाहता हूँ क्योंकि मुझे घर में बहुत प्यार मिलता है। पापा मुझे बाहर आइसक्रीम खिलाने ले जाते हैं। घर पर अपनी मनमानी कर सकते हैं और टीवी भी देख सकते हैं। हॉस्टल में कैमरे लगे रहते हैं। इसलिए हम शैतानी भी नहीं कर सकते।

अर्श मिर्जा, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश



चित्र: प्रिशा खेतान, दूसरी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मैं अपने लिए रोज़ जाने वाला स्कूल चुनूँगी क्योंकि तब हम अपने घर के पास रहेंगे। हम अपने दोस्तों से भी दूर नहीं होंगे। घर पर तो मैं मम्मी से पैसे ले लूँगी और जब मेरा जन्मदिन आएगा तो मैं ज़िद कर-करके मनवा लूँगी। बोर्डिंग स्कूल में तो कोई पैसे भी नहीं देगा। और ना तो कोई सामान लेने किसी को भिजवा सकते हैं।

सोनम जटाव, छठवीं, छावनी रीडिंग रूम, एकलव्य फाउंडेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश

मैं तो बोर्डिंग स्कूल चुनूँगी क्योंकि वहाँ बहुत अच्छी गतिविधियाँ होती हैं। और नए-नए दोस्त भी मिलते हैं। यह बात तो है कि हम अपने परिवार से दूर रहते हैं। लेकिन वहाँ बहुत मज़ा आता है। और जब मैं वहाँ से अपने घर जाऊँगी तो मम्मी-पापा बहुत खुश हो जाएँगे। और मम्मी नए-नए पकवान बनाएगी।

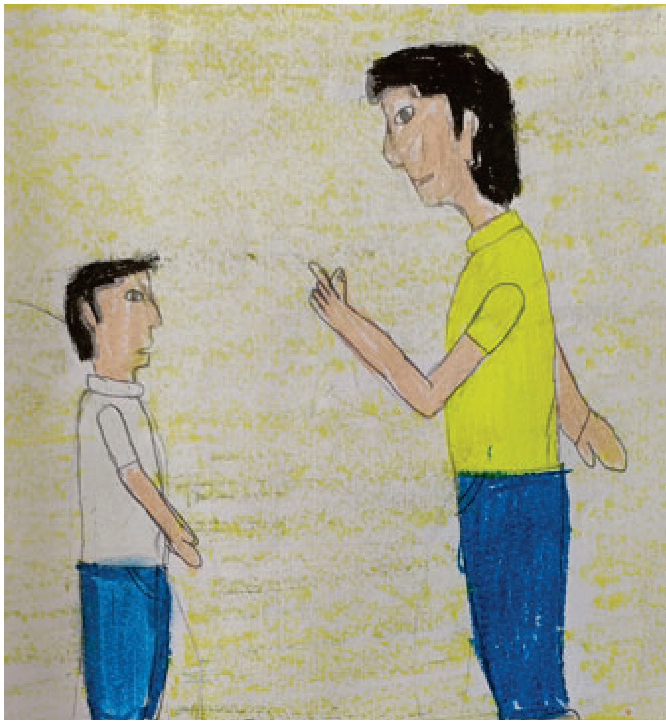
कनिष्का कुशवाहा, छठवीं, छावनी रीडिंग रूम, एकलव्य फाउंडेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश

अगर मुझे अपने लिए स्कूल चुनना हो तो में रोज घर से जाने वाला चुनूँगी क्योंकि बोर्डिग स्कूल में बहुत सारे नियम और कानून होते हैं। खाने पर नियम, गाने पर नियम, कहीं जाने पर नियम और भी जाने कितने नियम। उफ्फ, इतने नियमों का पालन करने से अच्छा है कि रोज घर से स्कूल जाओ और आने के बाद अपनी मर्ज़ी के मालिक रहो।

हर्षिता कोशले, बारहवीं, केन्द्रीय विद्यालय, देवास, मध्य प्रदेश

मुझे बोर्डिंग स्कूल पसन्द है ताकि मैं मम्मी को लैटर लिख सकूँ और मम्मी मेरे लिए लैटर भेजें।

आरती, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड



चित्र: श्रेयस विलास आडके, पाँचवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मैं गाँव में रहती हूँ। छुट्टी के दिन पूरा समय आम के बाग या खेतों पर बिताती हूँ। गाय और भैंस को शाम को चराने ले जाती हूँ। उनकी सवारी करना बहुत मज़ेदार होता है। अपने दोस्तों के साथ खलिहान जाती हूँ।

कल्पना मिश्रा, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

हम गाँव में रहकर स्कूल जाना पसन्द करेंगे क्योंकि मुझे पढ़ने से ज़्यादा मज़ा मछली पकड़ने, पेड़ पर चढ़ने, दुकान दौड़ने जैसी अनेक बदमाशियाँ करने में आता है। हॉस्टल में मुझे मैडम लोग बदमाशी नहीं करने देंगी। इसलिए मुझे घर से स्कूल जाना पसन्द है क्योंकि घर आकर मैं फिर से बदमाशी कर सकूँ।

अंकुश कुमार, तीसरी, ग्राम गोठी, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार



सफेद जूते

मनमीत नारंग

चित्र: मयूख घोष

स्कूल से आते ही मुनिया ने जूते धो दिए। ड्योढ़ी पर धूप अभी तक छनकर आ रही थी।

कल तक जूते सूख जाएँगे। फिर माँ से पैसे लेकर सफेद पॉलिश खरीद लाऊँगी। पॉलिश तो शायद रात भर में ही सूख जाएगी। न भी सूखे तो आज बुधवार है। शनिवार तक जूते एकदम चमक रहे होंगे। स्कूल में कैसे हैरान हो जाएँगे सब! खास कर बेला, मुबारका और सोनिया।

ड्योढ़ी पर बैठी मुनिया सोच रही थी। माँ को सब्ज़ी का थैला लाते देख वो उठ खड़ी हुई।

"माँ चाय बना दूँ तेरे लिए?"

माँ ने गालों पर हाथ फेरते हुए ठोड़ी को उँगलियों के पोरों से चूम लिया। मुनिया भागती गई रसोईघर में। थैला रखा और चाय का पानी चढ़ा दिया।

"अपने लिए भी बना ले। बिस्कुट लेकर आई हूँ," माँ ने आवाज़ दी।

मुनिया ने सर पर हाथ मारा। मना किया था बिस्कुट लाने को। अब पॉलिश के पैसे कैसे माँगू?

गर्म चाय में कौन ज़्यादा देर, बिना टूटे, बिस्कुट भिगोकर मुँह में डालेगा – ये मुनिया और उसकी माँ का सबसे पसन्दीदा खेल था। रोज़ बिस्कुट आते और रोज़ यह खेल होता।

अगली शाम मुनिया फिर से ड्योढ़ी पर बैठी बेसब्री से माँ की राह तक रही थी। आते ही माँ ने उसके गालों पर चुटकी ली और पैसे हाथ में थमा दिए। माँ सब कैसे जान लेती है! मुनिया दो सैकंड हाथ में धरे पैसे देखती रह गई।

भात पकाते हुए माँ देख रही थी कि कितने सब्र से मुनिया जूते का एक-एक कोना, एक-एक धब्बा सफेद पॉलिश से ढक रही थी।

"कितनी पॉलिश पीते हैं तेरे ये जूते। बच जाए तो मेरे मुँह पर भी लगा देना!" माँ हँसती हुईं रसोई घर से बोलीं।

"तुम ऐसे ही इतनी सुन्दर हो। साँवला रंग जँचता है तुम पर।" मुनिया की गर्दन अब पूरी तरह जूते पर झुकी हुई थी।

बादल गरजा तो मुनिया का हाथ हिल गया और पॉलिश की एक बूँद फर्श पर गिर गई। जूता वहीं पटक वो भागी दरवाज़े की ओर। आसमान में कोई तारा नहीं दिखाई दे रहा था।

बारिश हुई तो जूते गन्दे हो जाएँगे। यह सोच-सोचकर मुनिया को नींद नहीं आ रही थी। उसने भगवान से प्रार्थना की, "रात में बारिश करनी है तो कर दो ताकि सुबह मेरे जूते गन्दे ना हों।" फिर उसे याद आया रात में बारिश हुई तो गली और खड्डों में पानी भर जाएगा। कोई गाड़ी तेज़ निकली तो छींटें उड़ा देगी। न भी उड़ाए तो सड़क के किनारे की गीली मिट्टी जूते के तलवे से चिपकेगी और कभी न कभी जूतों पर भी छींटें गिर ही जाएँगे। उसने प्रार्थना बदली, "हे भगवान! बादल उड़ाकर ले जाओ। थोड़ा घूम आओ उन पर बैठकर। मैं एक बार स्कूल पहुँच जाऊँ फिर तुम्हारा मन किया तो यहाँ बादल भेज देना। बस एक बार मैं लता की तरह साफ, सफेद जूतों में स्कूल जाना चाहती हूँ। बताया था ना पिछली प्रार्थना में।"

अगली सुबह मुनिया ने चारों तरफ नज़र घुमाई तो भीगी सड़कें देख कर वो रुआँसी हो आई। भगवान कहीं सो तो नहीं गया था प्रार्थना से पहले ही! आसमान की तरफ देखकर उसने कुट्टी की और गुसलखाने में घुस गई। तैयार होकर शीशे में खुद को कितनी देर देखती रही और फिर गली की तरफ बढ़ गई। एक रिक्शा टन-टन करता निकला तो वो सहम गई और पार्क की दीवार के साथ सटकर खड़ी हो गई।

स्कूल दूर नहीं था। बस एक गली पार करके था। बीच में एक लम्बा पार्क पड़ता था। पार्क की दीवार के उस तरफ पेड़ थे और इस तरफ मिट्टी। मुनिया का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। वो एक गली आज कितनी लम्बी दिख रही थी। पार्क के अन्दर ज़मीन से एक हाथ ऊपर सीमेंट का रास्ता बना हुआ था। उस पर लोग सुबह सैर करते थे। पार्क के अन्दर से भी तो रास्ता होगा स्कूल तक पहुँचने का? पार्क के खतम होते ही तो स्कूल शुरू होता था। राजौरी गार्डन गवर्नमेंट स्कूल, नई दिल्ली – उसने बोर्ड देखा था कई बार पार्क में खेलते हुए। अन्दर ना तो गाड़ी, ना साइकिल और

ना ही कीचड़ का झंझट। मुनिया पार्क में बने पीले रंग के लोहे के छोटे-से गेट से अन्दर हो गई।

मुनिया की चाल में अब उछाल था। पार्क के दूसरे गेट के पास पहुँची तो देखा कुछ हलचल थी। एक बुज़ुर्ग हाथ में डण्डा लिए कुछ युवा लड़कों को डाँट रहे थे। उन लड़कों ने स्कूल की यूनिफॉर्म पहन रखी थी। मुनिया के स्कूल की यूनिफार्म। उसने पहले भी देखा था कि कुछ बड़े लड़के स्कूल





ना जाकर पार्क में खेलते रहते थे। पहले भी दो बुज़ुर्गों ने आकर डाँटा-धमकाया था। उन्होंने ये भी इल्ज़ाम लगाया था कि वे दोपहर में जुआ खेलते हैं और उधम मचाकर औरतों को तंग करते हैं। आज उस बुज़ुर्ग के साथ माली और एक मज़दूर भी था। मज़दूर एक नीला बोर्ड मिट्टी में गाड़ रहा था जिस पर सफेद अक्षरों में लिखा था – स्कूल की यूनिफॉर्म में दिखाई देने वाले बच्चों को पुलिस के हवाले कर दिया जाएगा।

मुनिया की आँखें फटी की फटी रह गईं। उस बुज़ुर्ग ने सीमेंट से बने रास्ते पर ज़ोर-से डण्डा मारा और लड़कों को गेट से बाहर कर दिया। फिर एक नज़र मुनिया को देखा तो उसका गला सूख गया।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो? चलो जाओ अपने स्कूल तुम भी। दोबारा यहाँ मत आना।"

पीछे से गेट के खट-से बन्द होने की आवाज़ आई। मुनिया ने दाएँ देखा तो उन चार लड़कों का झुण्ड चला जा रहा था। वो झट-से बाएँ मुड़ गई। जूतों के नीचे गीली मिट्टी चिपक रही थी और शायद कदम उठाने पर सफेद सलवार पर छींटे उड़ रहे थे। पर अब मुनिया को बस स्कूल पहुँचना था। स्कूल की दीवार को छूते हुए वो चलती गई। पर अन्दर जाने के लिए कोई गेट ना दिखाई पड़ा। उसने सुना तो था उस तरफ भी एक गेट है। उतना बड़ा नहीं पर छोटा गेट है।

दीवार पर पलस्तर नहीं था। खुरदुरी दीवार पर लगा सीमेंट मुनिया की उँगलियों में चुभ रहा था। पर दीवार को छूते हुए चलना उसे आश्वासन दे रहा था कि वो सही जा रही है। दीवार खतम होने को नहीं आ रही थी। इतने में काले रंग की एक बड़ी गाड़ी निकली और उसका एक पहिया बारिश के पानी से भरे खड्डे में पड़ा। छींटें जूतों से लेकर जुराबों, सलवार-कमीज़ पर गिरे। जैसे-तैसे मुँह बचा लिया। मुनिया दो सैकंड रुकी और फिर दीवार से हाथ हटा तेज़ी-से चलने लगी। दीवार बाएँ तरफ घूमी और वो भी घूम गई। बहुत चहल-पहल थी इस सड़क पर। सब्ज़ीवालों की रेड़ियाँ एक कतार में लगी थीं। स्कूल की दीवार ने अब एक और बायाँ मोड़ लिया। स्कूल का बोर्ड दिखाई दिया तो मुनिया के कदम और तेज़ हो गए। लेकिन स्कूल के बाहर इतना सन्नाटा देख वो घबरा गई।

"गेट तो बन्द कर दिया है अब। तुम पन्द्रह मिनट लेट हो आज गुड़िया," गेट पर खड़े नीली शर्ट पहने गार्ड भैया बोले।

मुनिया की आँखें भर आईं। अब सारी कहानी कैसे सुनाती और सुनाने को था भी क्या। बस धीमे-से बोली, "गुड़िया नहीं मुनिया।"

गार्ड भैया हँस पड़े। "तुम्हें पहले कभी लेट होते नहीं देखा, इसलिए जाने देता हूँ।" उसने बड़े गेट के अन्दर बना छोटा गेट खोल दिया।

मुनिया ने डेस्क के नीचे अपने पैरों को एक नज़र देखा और कॉपी के आखिरी पन्ने से पहले वाले पन्ने को खोला

पार्ले-जी बिस्कुट - 2 रुपए

पॉलिश - 15 रुपए

7 x 2 = 14 रुपए

यही हिसाब उसने पिछले हफ्ते कॉपी के आखिरी पन्ने पर लिखा था। हिसाब सीधा था। एक हफ्ता बिस्कुट न खाने से पॉलिश के पैसे बच जाएँगे। लेकिन मुनिया को फिर से लिखना अच्छा लग रहा था। लिखकर उस पर उँगलियाँ फेरना अच्छा लग रहा था। वो बार-बार बीच-बीच में पन्ना पलटकर देख रही थी। बस एक हफ्ता और...

चलो, अपनी आँखों से ग्रह देखें!

आलोक मांडवगणे
चित्र: आलोक मांडवगणे

तुमने आकाश में क्या-क्या देखा है? सभी ने दिन में सूरज और रात में चाँद तो देखा ही होगा। और रात में कई सारे तारे भी देखे होंगे। क्या तुम्हें मालूम है जो तारे तुम्हें आँखों से दिखाई देते हैं उनमें हमारे अपने सौर मण्डल के कुछ ग्रह भी शामिल हैं। बुध (Mercury), शुक्र (Venus), मंगल (Mars), गुरु (Jupiter) और शनि (Saturn) यह सभी ग्रह हम अपनी आँखों से बड़ी आसानी-से देख सकते है। ये ग्रह किसी आम तारे की तरह ही चमकते हैं।

यदि तुम इन ग्रहों को आकाश में कुछ दिनों तक रोज़ाना देखो तो पाओगे कि ये एक जगह नहीं टिकते हैं। क्या तुम्हें मालूम है ग्रहों को अँग्रेज़ी में *प्लानेट* (planet) क्यों कहते हैं? ग्रीक भाषा में *प्लानेट* का अर्थ *वंडरर* (wanderer) यानी 'भटकनेवाला' होता है। ऐसा क्यों? जो भी तारे हमें रात में दिखते हैं, वह हमसे अरबों-खरबों किलोमीटर दूर हैं। इतने दूर हैं कि उनके प्रकाश को हम तक पहुँचने में कई साल लग जाते हैं, जबकि प्रकाश की गति सबसे तेज़ होती है। यह एक सैकंड में तीन लाख किलोमीटर की दूरी पार कर लेता है। उन तारों के मुकाबले ये ग्रह तो हमारे पड़ोसी हैं और सूरज के इर्द-गिर्द मँडरा रहे हैं।

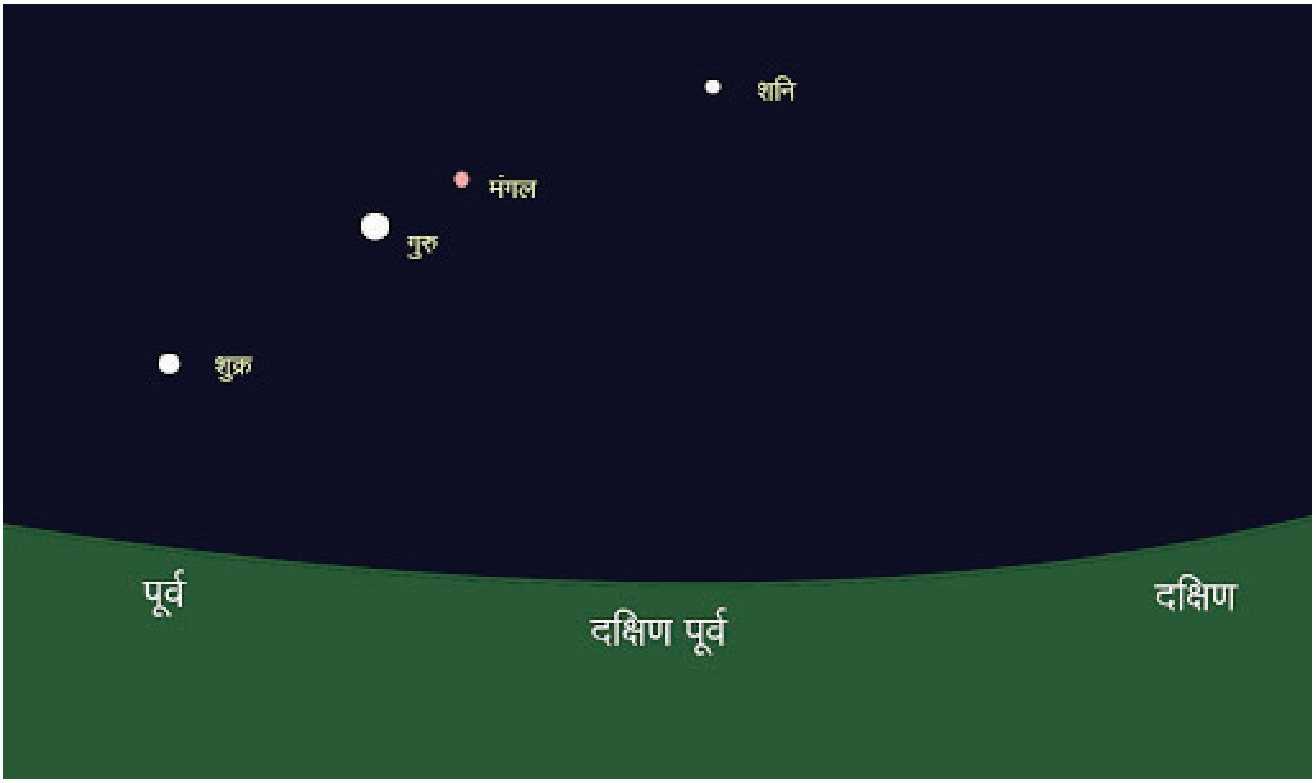
तुमने शायद ध्यान दिया हो कि ट्रेन या गाड़ी से जाते हुए हमें पास की चीज़ें तेज़ी-से पीछे जाती दिखाई देती हैं, जबकि दूर की चीज़ें धीमी गति से। इसी तरह पास के ग्रह हमें कुछ दिनों के अन्तराल में अपनी जगह से ज़्यादा दूर दिखाई देंगे। तारे तो इतनी दूर हैं कि उन्हें हिलता हुआ देखने के लिए भी हमें हज़ारों साल रुकना पड़ेगा।

कब और कहाँ देखें?

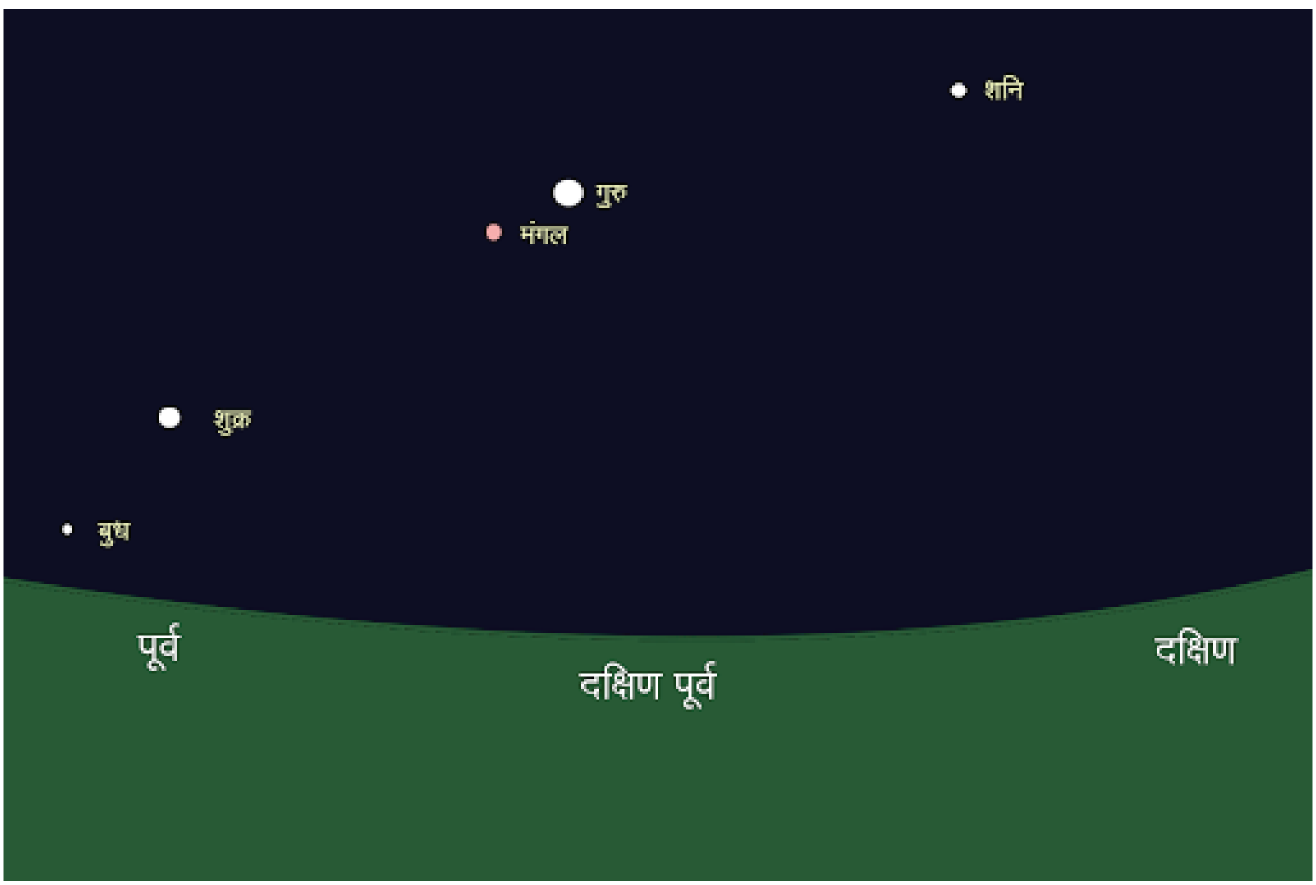
मई के महीने में ग्रहों को आसमान में देखने के लिए तुम्हें सुबह जल्दी उठना पड़ेगा! सूरज उगने के एक-दो घण्टा पहले जब आसमान पूरा काला हो, तब तुम्हें काफी सारे ग्रह पूर्व दिशा की ओर दिख जाएँगे। पूर्व क्षितिज से ऊपर जाते जाओ तो तुम्हें शुक्र, मंगल, गुरु और शनि दिखाई देंगे (चित्र 1)। जून के महीने तक बुध भी पूर्व में दिखाई देने लगेगा (चित्र 2)। उस समय तुम्हें इन पाँचों ग्रहों का शानदार दृश्य देखने को मिलेगा। अगर तुम इन्हें हर सुबह देख पाते हो तो ध्यान देना कि क्या इनकी स्थिति में कुछ बदलाव होता है।

एक खास बात यह है कि यही पाँच ग्रह ऐसे हैं जिन्हें बिना किसी टेलिस्कोप के केवल नंगी आँखों से देखा जा सकता है। इसी वजह से यह पाँचों ग्रह हज़ारों साल पहले ही खोजे जा चुके हैं। शुक्र और गुरु आकाश के किसी भी और चमकते तारे से ज़्यादा तेज़ चमकते दिखाई देते हैं। मंगल अलग-सा ही लाल रंग का चमकता दिखाई देता है। इनके अलावा सौर मंडल के बचे हुए ग्रह हैं – यूरेनस, नेप्च्यून और बौना ग्रह प्लूटो। इन्हें देखने के लिए तो एक बड़ा टेलिस्कोप लगेगा। यही वजह है कि इन ग्रहों की खोज बाद में हुई, तब जब हम बड़े टेलिस्कोप और कैमरे बना पाए।

रात का आसमान (Night sky)



चित्र 1 - 15 मई को सुबह सूर्योदय से पहले ग्रहों की स्थिति



चित्र 2 - 7 जून, सूर्योदय से पहले का दृश्य

आलोक मांडवगणे भोपाल के आर्यभट फाउण्डेशन में कार्यरत हैं।


भूल भुलैया

तुम भी जानो



शनि के छल्ले गायब हो रहे हैं

कई लोगों का मानना है कि हमारे सौर मण्डल के सारे ग्रहों में से शनि सबसे सुन्दर है। ऐसा उसके छल्लों के कारण है। बर्फ व पत्थर के कणों से बने ये छल्ले नाज़ुक दिखते हैं। अँधेरे में इनके हल्के स्लेटी, भूरे, गुलाबी रंग दमकते हैं। मगर अब ये छल्ले गायब हो रहे हैं। हर साल छल्लों से कण अलग हो रहे हैं। इनके कारण विविध हैं। लेकिन चिन्ता मत करना – इन्हें पूरी तरह से गायब होने में 30 करोड़ से भी ज़्यादा साल लगने वाले हैं।



नमक से बना एक महल

दक्षिण अमेरिका के बोलिविया में 3600 मीटर से भी ज़्यादा की ऊँचाई में नमक के मैदान हैं। यह दस हज़ार वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं। एक टूरिस्ट गाइड ने यहाँ नमक का बना एक होटल बनवा दिया है। इसके फर्श, छत, दीवारें और तो और फर्नीचर भी नमक का बना हुआ है। इसमें किसी आम होटल जैसी सारी सुविधाएँ हैं। इस नमकीन एहसास के लिए दुनिया भर से लोग यहाँ आते हैं। पर इस होटल का एक खास नियम है – तुम इसकी दीवारें चाट नहीं सकते!



चित्र: आरोही, केजी टू, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

आम का पेड़

मोनिका बघेल
नौवीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
झापरा, सुकमा, छत्तीसगढ़

मेरे गाँव का नाम भेलवापाल है। भेलवापाल में पेड़ों की संख्या थोड़ी कम है। सड़क के पास एक आम का पेड़ है। गर्मी के दिनों में उस पर मीठे और बड़े-बड़े आम लगते हैं। वहाँ पे एक रखवाली भी रहती है। जो कोई आम को तोड़ता है उसे वह बहुत डाँटती है।

एक दिन बच्चों को मीठे आम खाने का बहुत मन कर रहा था। वे चुपके-से आम तोड़ना चाहते थे। लेकिन वो रखवाली बुढ़िया थोड़ी चहल-पहल में भी भड़क जाती थी। वह तीनों बच्चों को चिल्लाने लगी।

“बदमाश बच्चे मुझे बेचने को आम नहीं मिलते और तुम लोग आम खाने आ जाते हो। भागो यहाँ से!” वो बच्चे दो-दो आम लेकर भाग गए और नदी के पास बैठकर खाने लगे।

चित्र: मोनिका बघेल, नौवीं, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय झापरा, सुकमा, छत्तीसगढ़





चित्र: अलफाज फारूक काझी, पाँचवीं, नाझरा विद्या मन्दिर हाई स्कूल, नाझरा, सोलापुर, महाराष्ट्र

मेरा प्यारा दोस्त

फरजाद अली बेग
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैं अपनी खाला के घर जाता हूँ। वो मेरे घर के पीछे ही रहती हैं। मुझे वहाँ पे बहुत अच्छा लगता है। वहाँ मेरे कई दोस्त भी हैं। लेकिन एक दोस्त की बुरी आदत है – स्वीटी सुपाड़ी खाना। जो मुझे अच्छा नहीं लगता। उसका नाम जुनैद है। उसके दाँत लाल हो गए हैं। मैं उसे कई बार समझा चुका हूँ। पर वो नहीं मानता। और मुझे भी खाने को नहीं देता है। क्योंकि उसे डर है कि कहीं मुझे भी खाने की आदत ना लग जाए। हम दोनों एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं। इसलिए मुझसे अलग होने पर भी वो मेरा प्यारा दोस्त है।

मेरा पन्ना

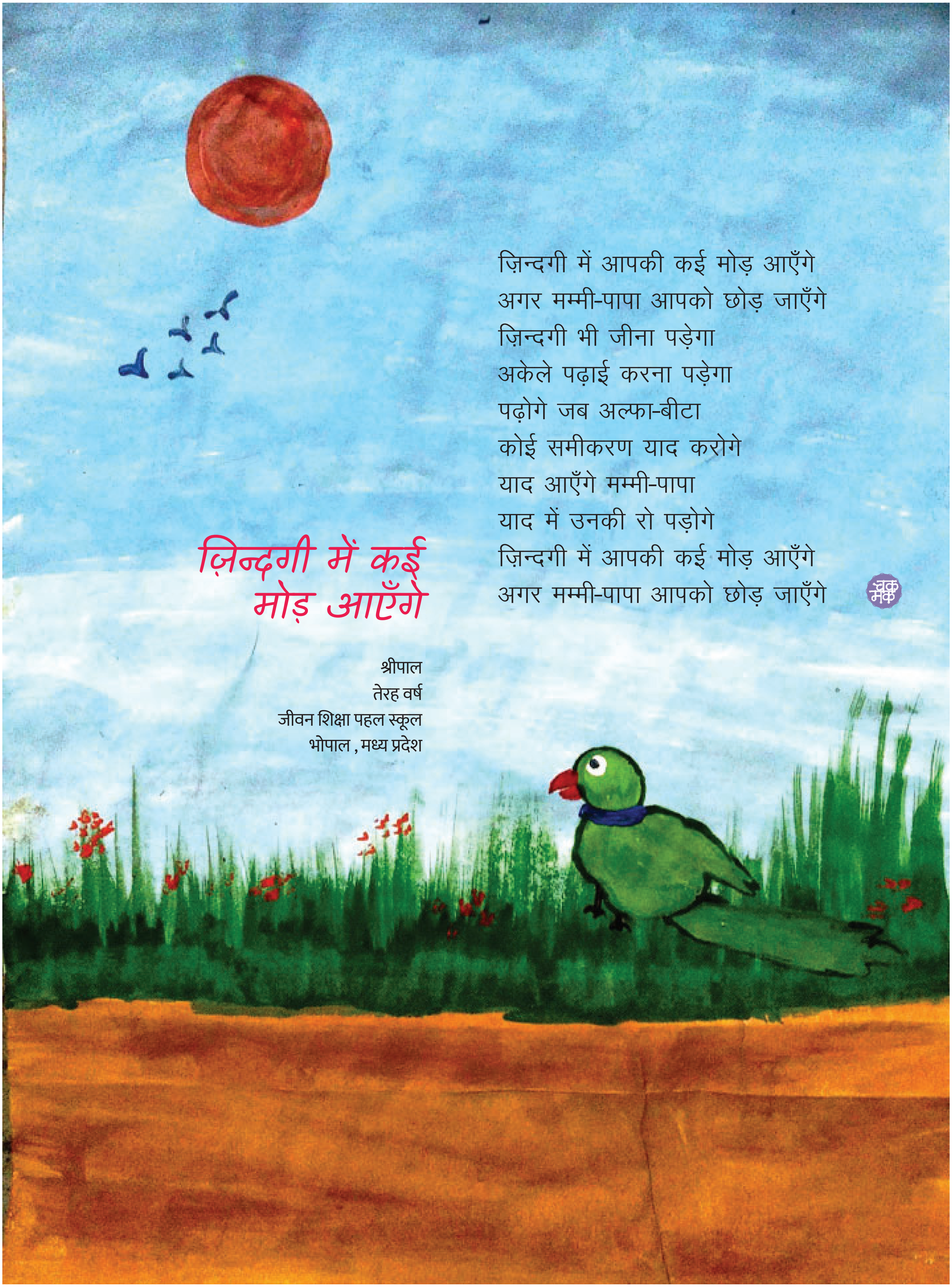
मेरे घर का काम-धन्धा

सोनू प्रजापति
पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला
कल्याणपुर, सागर, मध्य प्रदेश

मेरे घर में ईंट बेचने का काम होता है। सबसे पहले मेरे पापा ईंट भरने के लिए खुरई जाते हैं, जो हमारे घर से 30 किलोमीटर दूर है। ईंट बनाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता है। सबसे पहले मिट्टी लानी पड़ती है। फिर मिट्टी का गारा बनाकर साँचे में डालकर ईंट बनाई जाती है। फिर ईंटों को सुखाकर लकड़ी का भट्टा बनाकर उसमें रखकर आग लगाकर ईंटों को पकाया जाता है। इस तरह ईंट पककर तैयार हो जाती है। पकाने के बाद फिर ट्रैक्टर-ट्रॉली में भरकर ले जाते हैं। बेचने के लिए पापा बेगमगंज और राहतगढ़ जाते हैं। घर पर सिलाई-मशीन भी है जिससे मम्मी कपड़े भी सिलती हैं। इस तरह हमारे घर की कमाई होती है।



चित्र: ख़ुशी कुमारी, सातवीं, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार



ज़िन्दगी में कई मोड़ आएँगे

ज़िन्दगी में आपकी कई मोड़ आएँगे
अगर मम्मी-पापा आपको छोड़ जाएँगे
ज़िन्दगी भी जीना पड़ेगा
अकेले पढ़ाई करना पड़ेगा
पढ़ोगे जब अल्फा-बीटा
कोई समीकरण याद करोगे
याद आएँगे मम्मी-पापा
याद में उनकी रो पड़ोगे
ज़िन्दगी में आपकी कई मोड़ आएँगे
अगर मम्मी-पापा आपको छोड़ जाएँगे

श्रीपाल
तेरह वर्ष
जीवन शिक्षा पहल स्कूल
भोपाल , मध्य प्रदेश

चित्र: निरीक्षा, दूसरी, संस्कार भारती विद्यापीठ, कटारा हिल्स, भोपाल, मध्य प्रदेश



चित्र: निक्की कुमारी, पाँचवीं, ग्राम नरेन्द्रपुर, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

खेल-खेल में

वजीर आलम, नींव समूह, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

लड़के और लड़कियों में अन्तर बहुत होते हैं। पर उससे ज़्यादा समानताएँ होती हैं। बस उनसे बात नहीं होती। यदि होने लगे तो भेदभाव भी कम हो सकता है। पहले हम सब यानी लड़के-लड़कियाँ पढ़ाई तो साथ करते थे। मगर खेलते अलग-अलग खेल थे। पर धीरे-धीरे लगने लगा कि ऐसा कोई खेल नहीं है जो लड़कियाँ हमारे साथ नहीं खेल सकतीं। तो अब हम सब एक-दो खेल ज़रूर साथ मिलकर खेलते हैं। लड़कियाँ हमें ज़ोर-शोर से हराती भी हैं।



चित्र: शानवीर, दूसरी, गुरु रामदास पब्लिक हाई स्कूल, पाना, सिरसा, हरयाणा

मेरा पन्ना



1. मान लो कि तुम एक कमरे में बन्द हो। उससे बाहर निकलने के लिए तुम्हें तीन दरवाज़ों में से किसी एक को चुनना है। पहले दरवाज़े के पीछे बहुत सारे ज़हरीले साँप हैं। दूसरे दरवाज़े के पीछे गहरी खाई है। और तीसरे दरवाज़े के पीछे एक भूखा बाघ है जिसने 2 महीने से कुछ नहीं खाया है। तुम कौन-सा दरवाज़ा चुनोगे?

2. एक बार एक लड़की बाइसवीं मंज़िल की खिड़की को अन्दर से साफ कर रही थी। फिर अचानक वह खिड़की से बाहर कूद जाती है। पर उसे बिलकुल भी चोट नहीं आती। वो किसी रस्सी वगैरह से बँधी नहीं थी। तो फिर उसे चोट कैसे नहीं लगी?

3. इस पिज़्ज़ा के बचे हुए भाग में कौन-सी संख्या आएगी?



4. दी गई ग्रिड में कुछ वाद्य यंत्रों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने नाम ढूँढे?

सा	द	ढो	ल	क	वा	बाँ	बी	णा
रो	रं	म	अ	कॉ	र्डि	य	न	च
श	गि	गी	ल	स	ड	क	लि	ड
ह	ड	टा	हा	बाँ	रो	म	डु	न
ना	सि	ता	र	सु	त	द	रु	गा
ई	क	ल	मो	री	ब	डु	द	ड़ा
सि	वी	ढो	नि	बाँ	ला	पि	ग	ल
ता	शं	णा	य	सी	स	र	या	वी
ग	ख	क	म	घं	टी	पि	का	नो

फटाफट बताओ

तुम मुझे देखते हो, मैं तुम्हें देखता हूँ। तुम अपना दायाँ हाथ उठाते हो, तो मैं अपना बाँया हाथ उठाता हूँ। बताओ मैं कौन हूँ?

(ाणर्पद)

मेरे पास शब्द तो हैं, लेकिन मैं बोलता नहीं। बताओ मैं कौन हूँ?

(बाताकि)

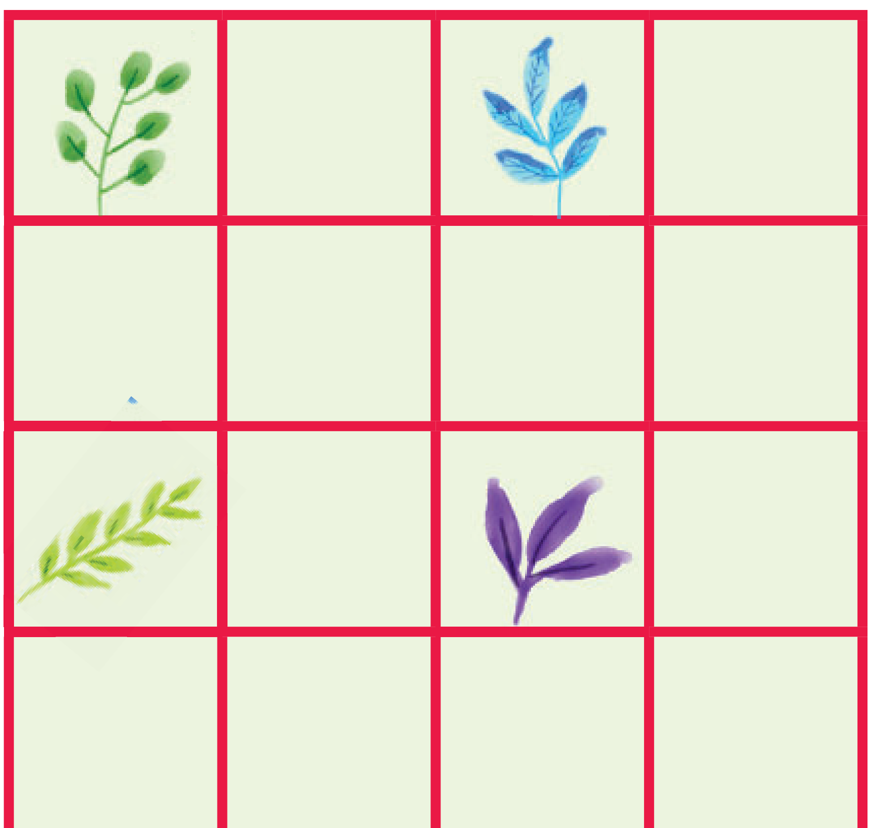
माथापच्ची



5.

इस चित्र में कुछ अन्तर हैं, क्या तुम उन्हें ढूँढ सकते हो?

7. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग पत्तियाँ होनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी पत्तियाँ होंगी?



फटाफट बताओ

पंख नहीं फिर भी मैं उड़ सकता हूँ। आँखें नहीं फिर भी मैं रो सकता हूँ। कौन हूँ मैं?

(बादल)

मुझे उड़ा सकते हो, कर सकते हो और बना भी सकते हो। पहचानो मैं कौन हूँ?

(मज़ाक)

आपस की उलझन सुलझाकर
अलग-अलग वह बाँटती
दाँत हैं लेकिन फिर भी देखो
कभी नहीं वह काटती

(कंघी)

खुद कभी वह कुछ न खाए
लेकिन सबको खूब खिलाए

(चम्मच)





8	4	6					1	5
		1	5	4	8			3
5		3	6					8
		7	9	2	5			
2		8				5	9	7
	1		8	7	3			
		9						6
	7	2	4			1		9
6		4			1	3	8	2

सुडोकू 53

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची
जवाब

1. तीसरा दरवाज़ा। क्योंकि दो महीने से भूखा बाघ अब तक तो मर गया होगा।

2. लड़की खिड़की से बाहर बालकनी में कूदती है। इसीलिए उसे कोई चोट नहीं लगी।

3. इस पिज़्ज़ा में दी गई हरेक संख्या प्रतिशत में है। यानी कि सभी संख्याओं को जोड़ने पर 100 मिलना चाहिए। तो बस दी गई सभी संख्याओं के जोड़ यानी कि 66 को 100 में से घटा लो। तो, तुम्हारा उत्तर होगा 34 होगा।

5.

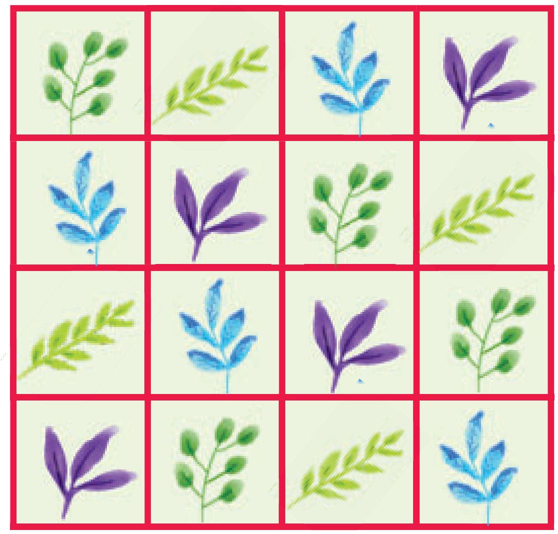


भूल सुधार: अप्रैल अंक में पेज 29 पर आखिरी लाइन में भूलवश '20 का 1/10 भाग हुआ 4' लिखा गया था। इसे होना चाहिए: 20 का 1/10 भाग हुआ 2, तो तीसरी बेटी को 2 ऊँट मिले।

4.

सा	द	ढो	ल	क	वा	बाँ	बी	णा
रो	रं	म	अ	कॉ	र्डि	य	न	च
श	गि	गी	ल	स	ड	क	लि	ड
ह	ड	टा	हा	बाँ	रो	म	डु	न
ना	सि	ता	र	सु	त	द	रु	गा
ई	क	ल	मो	री	ब	ड़ु	द	ड़ा
सि	वी	ढो	नि	बाँ	ला	पि	ग	ल
ता	शं	णा	य	सी	स	र	या	वी
ग	ख	क	म	घं	टी	पि	का	नो

6.



अप्रैल की चित्रपहेली का जवाब

	1 मै	के	नि	2 क			3 धू	प
4 पा	ना			5 म	ख	6 म	ल	
		7 औ	ज़ा	र		शी		
8 प	त्थ	र				9 न	10 सै	नी
हि		11 त	12 ग	ड्ढा			नि	
या			रा		13 पे	च	क	14 स
	15 सू	र	ज		ट्रो			ला
	अ			16 बि	ल		17 पं	ख
18 का	र		19 छ	ल्ला		20 खो	खा	

सुडोकू-52 का जवाब

2	6	4	9	3	8	5	7	1
3	8	7	5	4	1	2	6	9
5	1	9	7	6	2	4	3	8
7	4	6	8	2	5	1	9	3
8	5	2	1	9	3	7	4	6
9	3	1	6	7	4	8	2	5
4	2	5	3	1	6	9	8	7
6	9	8	4	5	7	3	1	2
1	7	3	2	8	9	6	5	4

तुम भी जानो



दुनिया की सबसे पहली लेखक?

करीब 4000 साल पहले एनहैदुआना नाम की एक जानी-मानी कवि हुआ करती थीं। वो वर्तमान के इराक (उस समय के मेसोपोटामिया) के राजा सार्‌गॉन की बेटी थीं। साथ में मुख्य पुरोहित भी थीं। मिट्‌टी के तख्तों पर लिखी उनकी कविताएँ आज भी देखने को मिलेंगी। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि ये शायद दुनिया की सबसे पुरानी लेखक हैं जिनके साहित्य को एक पहचान दी जा सकती है। मेसोपोटामिया के दुनिया के सबसे पुराने तख्तों में अलग-अलग लोगों के लेखन तो मिले हैं, लेकिन उनके कार्य की मात्रा एनहैदुआना जितनी नहीं है।

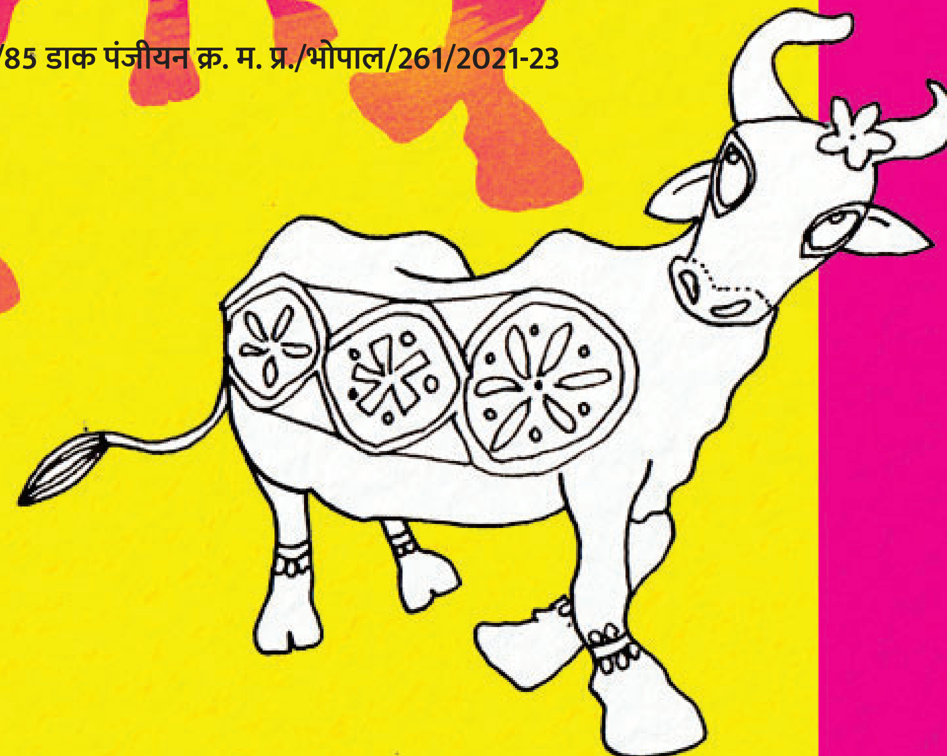


धीमी गति के स्लॉथ

मध्य और दक्षिण अमेरिका के जानवर स्लॉथ अपनी धीमी गति के लिए प्रसिद्ध हैं। दिन भर पेड़ों से लटकने वाले ये जीव सिर्फ टट्‌टी करने ज़मीन पर आते हैं। और एक दिन में लगभग चालीस मीटर की दूरी तय करते हैं। धीरे-से हिलते हैं, धीरे-से पलकें झपकते हैं और धीरे-से खाते हैं। हाल ही में पता चला है कि इनका खाना भी धीरे-से पचता है। मनुष्यों में ये प्रक्रिया कुछ डेढ़ दिन का मामला है, इनमें दो हफ्तों का। सिर्फ यही नहीं, इनकी सारी शारीरिक प्रक्रियाएँ धीमी गति से होती हैं।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

बैल चलो

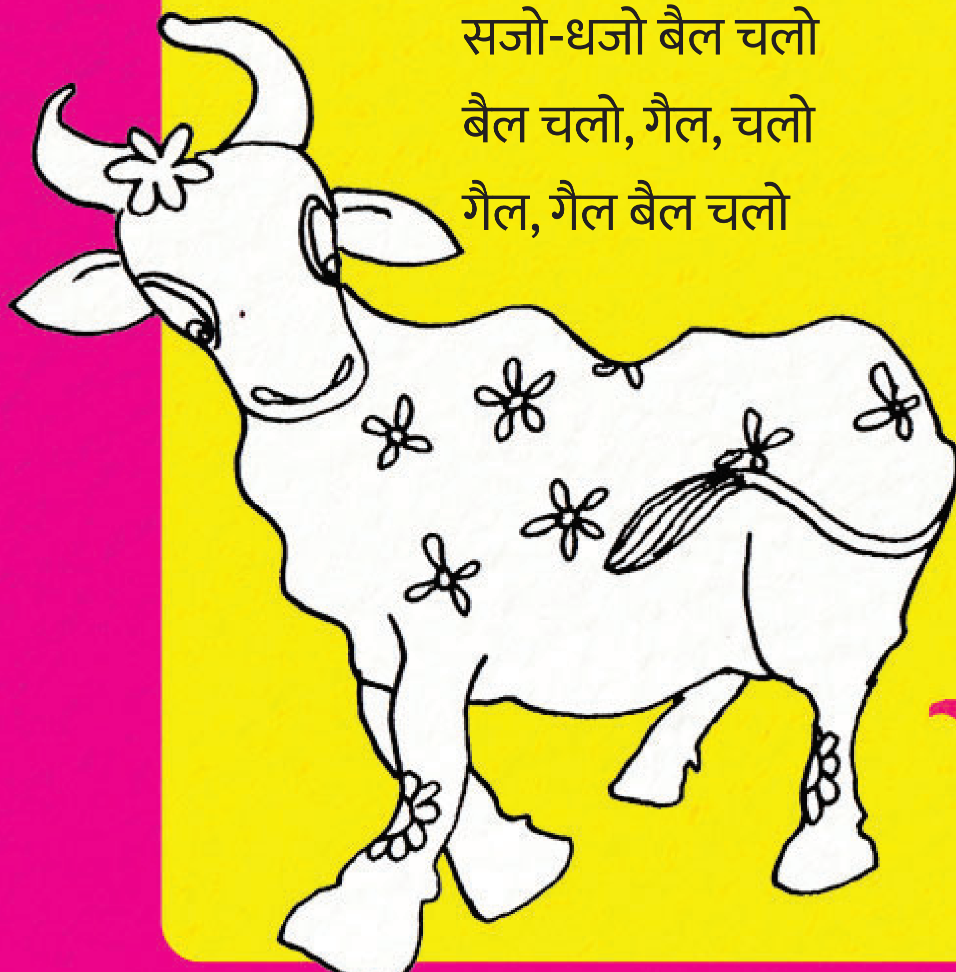


अनुराधा जैन

चित्र: कनक शशि

चम्पा को फूल सजो
सजो-धजो बैल चलो
बैल चलो, गैल, चलो
गैल, गैल बैल चलो

इतरातो बैल चलो
गुड, गुड, गुड गट्टम गट्ट
पो पो पो, पुक्कम पुट
धप्प, गोबर छाप चलो
बैल चलो, गैल, चलो
गैल, गैल बैल चलो





प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन